बुज़ुर्गों की नज़र में

इमाम पाक
और
यज़ीद नापाक

मुअल्लिफ़

अताए ख़्वाजा हज़रत मौलाना

अनवार अहमद क़ादरी रज़वी बरकाती

मद्दज़िल्लुहुल आली

तमाम भाईयो को सलाम किताबे

स्केन करके पीडिएफ में आप

तक पहुँचाने के लिए इस

फक़ीर को अपनी दुआओ में

खास तौर पर याद रखे।

दुआओ का तालीब

सग ए रज़ा लाला ख़ान

गुलामे आला हज़रत

बुज़ुर्गों की नज़र में

इमाम पाक

और

यज़ीद नापाक

मुअल्लिफ़

अताए ख़्वाजा हज़रत मौलाना

अनवार अहमद क़ादरी रज़वी बरकाती

मद्दज़िल्लुहुल आली

नाम किताब	:	बुज़ुर्गों की नज़र में "इमाम पाक और यज़ीद नापाक"
मुअल्लिफ़	:	अताए ख़्वाजा हज़रत मौलाना अनवार अहमद क़ादरी रज़वी बरकाती मद्दज़िल्लुहुल आली
तक़रीज़े जलील	:	आलिमे बा अमल जामेअ माकूल व मनकूल उस्ताज़ुल उलमा हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद कुदरतुल्लाह रज़वी मद्दज़िल्लुहुल आली
तसहीहे किताबत	:	हज़रत मौलाना रज़ीयुद्दीन अहमद सा. क़ादरी रज़वी
सने इशाअत 1	:	1431 हि. / 2010 ई.
तादाद	:	एक हज़ार
क़म्पोज़िंग	:	रज़वी कम्प्यूटर, इन्दौर (98270–14799)

मिलने के पते

- ✦ कुतुब ख़ाना क़ादरिया, इटवा बाज़ार, सिद्धार्थ नगर (यू.पी.)
- ✦ अल जामिअतुल ग़ौसिया ग़रीब नवाज़, खजराना, इन्दौर
- ✦ नूरी कुतुब ख़ाना, बड़वाली चौकी, इन्दौर
- ✦ नूरुद्दीन कुतुबख़ाना, दरगाह शरीफ़ के पास, खजराना, इन्दौर

फ़हरिस्ते मज़ामीन

मौत के सैलाब में हर ख़ुश्क व तर बह जाएगा
हाँ मगर नामे हुसैन इब्ने अली रह जाएगा

इंतिसाब

महबूबे ख़ुदा मोहम्मद मुस्तफ़ा (صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم)
और
आपके चारों ख़ुलफ़ाए राशेदीन
और
आपकी प्यारी बेटी सय्यदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा
और
आपके नूरे ऐन इमाम हसन और इमाम हुसैन
और
आपकी आल मेरे पीरे आज़म हुज़ूर ग़ौसेआज़म
व हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़
और
आपके आशिक़े आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा
व मुर्शिदे आज़म मुस्तफ़ा रज़ा
और
आपकी उम्मत के वली मेरे पीरो मुर्शिद मौलाना शाह
मुफ़्ती बदरुद्दीन अहमद क़ादरी रज़वी
व
मेरे करीम, मजज़ूब बुज़ुर्ग हुज़ूर दरया शाह बाबा (رضی اللہ تعالیٰ عنہم اجمعین)
के नाम
जिन की दुआओं का अबरे करम मुझ पर बरस रहा है
और
क़ियामत तक बरसता रहेगा.....इंशाअल्लाहो तआला

गदाए ग़ौसोख़्वाजा व रज़ा
अनवार अहमद क़ादरी बरकाती रज़वी

तक़रीज़े जलील

आलिमेबा अमल जामेअ़ माकूल व मन्कूल उस्ताज़ुल उलमा
हज़रत अल्लामा अलहाज अश्शाह **मुफ़्ती मोहम्मद क़ुदरतुल्लाह सा.**
क़िब्ला रज़वी मद्दज़िल्लाहुल आली, शैख़ुल हदीस दारुल उलूम
अहलेसुन्नत, तनवीरुल इस्लाम, अमरडोभा (यू.पी.)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنُصَلِّی وَنُسَلِّمُ عَلٰی حَبِيْبِهِ الْكَرِيْمِ

وَعَلٰی اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ اَجْمَعِيْنَ اَمَّا بَعْدُ!

अज़ीज़े ग्रामी मरतबत हज़रत अल्लामा मौलाना **अनवार अहमद साहब क़ादरी रज़वी** जीदा मज्दहुम ख़लीफ़ा–ए– हुज़ूर बदरे मिल्लत अलैहिर्रमतो वर्रिज़्वान का रिसाला ''**इमाम पाक और यज़ीद नापाक**'' तक़रीबन मुकम्मल ही देखा जिस में आपने अहले बैते नबिये करीम अलैहिस्सलातो वस्सलाम की महब्बत व अक़ीदत और फ़ज़ाइले अहले बैत को क़ुरआने करीम, अहादीसे नबविया और अक़्वाले उलमाए सलफ़ से साबित किया है और मैदाने कार ज़ार करबला में आपके हक़ परस्त होने नीज़ आपकी मज़लूमियत को बहुत वाज़ेह दलाइल से साबित करके उन गुस्ताख़ाने अहले बैते नुबुव्वत को दंदाने शिकन जवाब देकर उन की जानिब से यज़ीद के ख़लीफ़ा बरहक़ होनेऔर इमाम आली मुक़ाम रज़ियल्लाहो तआला अन्हो को बाग़ी क़रार दिये जाने का भरपूर सुबूत फ़राहम करके उनके बातिल दावों को हबाइम मंसूरा क़ार दे दिया है और यज़ीद के ज़ालिम व जाबिर होने और उसके बद अमल व बद किरदार और पलीद व नापाक होने पर दलाइल के अंबार लगा दिये हैं । और अहले बैते नबुव्वत की मुहब्बत व अक़ीदत का बर मला इज़हार करके यज़ीदियों की नापाक साज़िशों क़ो बेनक़ाब कर दिया है।

अल्लाह तआला मौलाना की इस ख़िदमत को शरफ़े क़ुबूल अता फ़रमा कर इस रिसाले को मक़बूले अनाम बनाए। आमीन।

واخر دعونا ان الحمد لله رب العٰلمين۔

फ़क़त

मुहम्मद क़ुदरतुल्लाह अर्रज़वी ग़फ़रा लहू
शैख़ुल हदीस दारुल उलूम अहले सुन्नत तनवीरुल इस्लाम,
अमरढोबा, ज़िला संत कबीर नगर (यू.पी.)
14 शअ़बानुल मुअज़्ज़म सन् 1431 हि.

पेशे लफ़्ज़

الحمد لله والصلوٰة والسلام على رسوله وعلى اله واصحابه

इस किताब में हमने अहादीसे करीमा और अक़्वाल अइम्मए किराम व मुहद्दिसीने इज़ाम के हक़ाइक़ व दलाइल के साथ दिन के उजाले की हक़ीक़त से ज़्यादा वाज़ेह और साबित किया है कि बुज़ुर्गों की नज़र में हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो इमाम पाक हैं और यज़ीद पलीद नापाक है और जन्नती जवानों के सरदार नवासए नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम, इब्ने अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो और फ़ातिमतुज़्ज़ेहरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा के नूरे एन हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की शान व अज़मत और यज़ीद नापाक की हैसियत व ख़बासत को उजागर किया है और हज़रत इमाम पाक की बा बरकत ज़ात पर यज़ीद के हामियों ने जो इलज़ाम लगाया और जिन बे बुनियाद बातों को उनकी जानिब मन्सूब किया है उन सब का मुदल्लल जवाब और यज़ीद नापाक को नेक व सालेह व अमीरुल मोमिनीन और जन्नती इंसान साबित करने की जो नापाक कोशिशें की गई हैं उन सबका भी शाफ़ी व काफ़ी जवाब दिया है और यह हक़ीक़त वाज़ेह क्या है कि यज़ीद नापाक, ज़ानी व शराबी था और जन्नती न था वह हदीस शरीफ़ जिसमें इमाम पाक के नाना जान रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने बशारत दी थी कि कुस्तुन तुनिया पर पहला जो लश्करे इस्लाम हम्ला आवर होगा वह सब जन्नती होंगे तो उस पहले लश्कर में यज़ीद नापाक न था। यज़ीद के हामियों से गुज़ारिश है कि यज़ीद नापाक को जन्नती और नेक व सालेह इंसान होने की बे जा और नापाक कोशिश न करें। हक़ सर बलंद होकर रहता है।

अभी ऐ दीं फ़रोशो वक़्त हैं अब भी संभल जाओ
व गर न ग़ज़बे शब्बीरी जलाकर राख कर देगी

अल्लाह तआला की अता व बख़्शिश से हज़रत इमाम हुसैन के नाना जान महबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिहि वसल्लम जन्नत के मालिक हैं और हज़रत इमाम हुसैन की अम्मी जान

फ़ातेमतुज़्जेहरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा जन्नती औरतों की सरदार हैं। और हज़रत इमाम हसन व हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा जन्नती जवानों के सरदार हैं।

अब ग़ौर करो और सोचो ! कि जिनकी जन्नत है उनके बेटों को क़त्ल करके उनके घरों को जलाकर क्या जन्नत में जा सकते हो। उनके बच्चों पर दाना और पानी बन्द किया और उन्हें भूका प्यासा रखा। कल बरोज़े हश्र तस्नीमो कौसर की नहरों पर उन्हीं का इजारा व क़ब्ज़ा होगा और तुम प्यास से तड़प रहे होगे तो तुम्हारी प्यास कौन बुझाएगा इसलिये आज ही तौबह कर लो और यज़ीद नापाक जैसे बद तरीन इन्सान की नाहक़ और बेजा हिमायत से बाज़ आ जाओ। हज़रत इमाम हुसैन करीम हैं और उनका पूरा घराना करीम व रहीम है। मुआफ़ फ़रमा देंगे। नजात व बख़्शिश के हक़दार बन जाओगे।

आज ले उनकी पनाह आज मदद माँग उनसे
फिर न मानेंगे कियामत में अगर मान गया

और ईमान वालों के लिये तर्ग़ीब दी गई है कि अपने आक़ा हज़रत इमाम हुसैन और उनकी अहले बैत के मक़ाम व मर्तबे को पहचानो ! और उनकी महब्बत व उलफ़त का दामन मज़बूती के साथ थामे रखो इंशाअल्लाहो तआला दीन व दुनिया की सुर ख़ुरुई और कामयाबी नसीब होगी।

मुहर्रम शरीफ़ में ख़ुराफ़ात व बिदआत से बचने की पूरी कोशिश करो और नेक कामों में मुहर्रम शरीफ़ की साअतें गुज़ारने की कोशिश करो ताकि अल्लाह तआला और उसके महबूब रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की रज़ा व ख़ुशनोदी हासिल करके फ़लाहे दारैन के मुस्तहिक़ बन जाओ।

सगे आस्तानए सुल्तानुल हिन्द ख़्वाजा ग़रीब नवाज़
अनवार अहमद क़ादरी बरकाती रज़वी
4 रमज़ानुल मुबारक - 1431 हि.
15 अगस्त - 2010 ई.

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى حَبِيْبِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى اٰلِهِ الطَّيِّبِيْنَ الطَّاهِرِيْنَ وَاَصْحَابِهِ الْمُكَرَّمِيْنَ وَابْنِهِ الْكَرِيْمِ الْحُسَيْنِ الشَّهِيْدِ ابْنِ عَلِيِّ نِ الْمُرْتَضٰى اَجْمَعِيْنَ

اَمَّا بَعْدُ !

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ لَّاۤ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِى الْقُرْبٰى (پ۲۵، رکوع۴)

صَدَقَ اللّٰهُ الْعَظِيْمُ وَصَدَقَ رَسُوْلُهُ النَّبِيُّ الْاَمِيْنُ الْكَرِيْمُ وَنَحْنُ عَلٰى ذٰلِكَ لَمِنَ الشَّاهِدِيْنَ وَالشَّاكِرِيْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ.

तुम्हारा ज़िक्र मेरा दीन व ईमाँ या रसूलल्लाह
तुम्हारा मुसहफ़े रूख़ मेरा कुरआँ या रसूलल्लाह
तुम्हारे दुश्मनों के सर कुचलने को रहें क़ायम
गुलामाने शहे अहमद रज़ा ख़ाँ या रसूलल्लाह

नवासए रसूल, बाग़े रिसालत के फूल, हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो सय्यद, आले रसूल और अहले बैत हैं।

आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं–

तेरी नस्ले पाक में है बच्चा बच्चा नूर का
तू है ऐने नूर तेरा सब घराना नूर का

और किसी आशिक़ ने कहा है–

कौनेन में बलन्द है रुतबा हुसैन का
फ़र्शे ज़मीं से अर्श तक शोहरह हुसैन का
बे मिस्ल है जहाँ में कुंबा हुसैन का
सुल्ताने दो जहाँ है नाना हुसैन का

अल्लाह तआला क़ुरआने करीम में अहले बैत का ज़िक्र फ़रमाता है:

قُلْ لَّا اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِى الْقُرْبٰى (پ۲۵، رکوع ۴)

तर्जमा : ऐ महबूब सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तुम फ़रमाओ कि मैं उस पर यानी तबलीग़े रिसालत और इरशाद व हिदायत पर तुम से कुछ अज्र नहीं माँगता मगर क़राबत की महब्बत–

यानी मैं तुम से अपने रिश्तेदारों की महब्बत का मुतालबा करता हूँ।

ऐ ईमान वालो ! हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो जिनके नानाजान महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिह वसल्लम हैं और जिनके वालिदे ग्रामी हज़रत मौला अली शैरे ख़ुदा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो हैं और जिनकी माँ सैयदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा जो जन्नती औरतों की सरदार हैं जिनके बिरादरे अकबर हज़रत सैयदना इमाम हसन मुज्तबा हैं। क़ुरआन व हदीस में जिनके बे शुमार फ़ज़ाइल व मनाक़िब का ज़िक्र मौजूद है। और सहाबये किराम रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम अजमईन से लेकर आजतक जितने अइम्मए किराम व मुहद्दिसीने इज़ाम और औलिया व उलमाए उम्मत हुए हैं सबने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के प्यारे नवासे हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की गुलामी व मुहब्बत का पट्टा अपनी गर्दनों में डाला है और आपके फ़ज़ाइलो मनाक़िब का

ख़ुतबा अलल एलान पढ़ा है और अपनी किताबों में भी बर मला इज़हार किया और लिखा है और आपके नाम के साथ रहमतुल्लाहि तआला अलैहे और रज़ियल्लाहो तआला अन्हो कहा और अपनी किताबों में लिखा भी है।

लेकिन यज़ीद नापाक के मुताल्लिक़ सहाबा–ए–किराम से लेकर अइम्मए किराम, मुहद्देसीने इज़ाम और उम्मत के औलिया व उलमा इन तमाम बुज़ुर्गों में से किसी ने भी आज तक यज़ीद नापाक के नाम के साथ रहमतुल्लाहे तआला अलैहे और रज़ियल्लाहो तआला अन्हो न कहा है और न लिखा है। यही वजह है कि यज़ीद के चाहने वाले आज तक कोई मोतबर व मुस्तनद सुबूत पैश नहीं कर सके और क़ियामत तक पैश नहीं कर सकते इंशाअल्लाहु तआला। जब है ही नहीं तो सूबत लाएंगे कहाँ से ?

هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۔

हाँ सहाबा–ए–किराम से आज तक तमाम बुज़ुर्गाने दीन ने यज़ीद नापाक को पलीद, शराबी, जुवारी, ज़ानी, तारिकुस्सलात, के नामों के साथ ज़रूर याद किया है और अपनी किताबों में लिखा भी है।

अब ! नवासए रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के फ़ज़ाइलो कमालात जो क़ुरआनो हदीस में बयान हैं और कुछ फ़ज़ाइल मोतबर किताबों के हवाले से जिसे बुज़ुर्गों ने अपनी किताबों में तहरीर फ़रमाए हैं। मुलाहज़ा फ़रमाइये।

अल्लाह तआला का इरशादे पाक–

قُلْ لَّا اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِى الْقُرْبٰى (پ۲۵، رکوع ۴)

यानी ऐ प्यारे रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम तुम फ़रमा दो, मैं तुम से तब्लीग़ का कोई मुआवज़ा यानी

बदला नहीं माँगता।

हाँ तुम्हें हुक्म देता हूँ कि तुम मेरे रिश्तेदारों से महब्बत करो।
(बरकाते आले रसूल, स. 219)

मश्हूर इमाम अल्लामा जलालुद्दीन सियूती रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने अपनी मश्हूर तफ़्सीर दुर्रे मन्सूर में और बहुत से मुफ़स्सेरीन ने इस आयते करीमा की तफ़्सीर करते हुए मश्हूर सहाबी हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा से नक़्ल किया है कि

सहाबा-ए-किराम रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैका व आलिका व सल्लम आपके वह कौन से रिश्तेदार हैं जिनकी महब्बत हम पर वाजिब है ? फ़रमाया- अली, फ़ातिमा और उनकी औलाद यानी हज़रत इमाम हसन और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम (बरकाते आले रसूल, स.219)

सहाबये किराम रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन ने जब अल्लाह तआला का यह हुक्म सुना तो दरबारे रिसालत में अर्ज़ किया-

या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका व सल्लम हमें बताया जाए कि आपके वह रिश्तेदार कौन लोग हैं जिनकी महब्बत व उल्फ़त हम पर वाजिब की गई है ?

قَالَ عَلِيٌّ وَفَاطِمَةُ وَالْحَسَنُ وَالْحُسَيْنُ وَابْنَاهُمَا

तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम ने फ़रमाया : अली व फ़ातिमा और हसन व हुसैन और उनके बेटे (यानी इमाम हसन और इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा की नस्ले पाक से क़ियामत तक जितनी औलाद होंगे सब इस फ़रमान में शामिल हैं। (तफ़्सीर इब्ने अरबी, जि.2, स. 212)

इसी तरह की रिवायत, जलालैन शरीफ़, जि.2, स. 32, अस्सवाएकुल मुहर्रिक़ा, स. 118, ज़ुरक़ानी अलल मवाहिब, जि.3, स.7 में भी है।

बहुत बड़े इमाम : इमाम सुद्दी फ़रमाते हैं कि जब हज़रत इमाम ज़ैनुल आबेदीन बिन इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा को क़ैदी बनाकर लाया गया और रास्ते में एक जगह खड़ा किया गया तो एक ज़ालिम शख़्स जो शाम का रहने वाला था उसने इमाम ज़ैनुल आबेदीन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से कहा-

खुदा का शुक्र है जिसने तुम्हें क़त्ल किया और तुम्हारी जड़ों को काटा और फ़ितना करने वालों को मिटाया (मआज़ल्लाहे तआला) तो हज़रत इमाम ज़ेनुल आबेदीन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने इस शामी ज़ालिम से फ़रमाया- क्या तुमने कुरआने करीम में यह आयत नहीं पढ़ी है ?

قُلْ لَّآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِى الْقُرْبٰى

तो उस शख़्स ने कहा किया वह लोग तुम हो ? तो हज़रत इमाम ज़ैनुल आबेदीन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फ़रमाया, हाँ- बिला शक व शुबह वह लोग हम हैं।
(तफ़्सीरे ख़ाज़िन, जि.6, स.122, अस्सवाएकुल मुहर्रिक़ा, स.68)

अज़ीमुश्शान आशिके रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम आलिमे रब्बानी हज़रत इमाम यूसुफ़ बिन इस्माईल निब्हानी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो इस वाक़िए को बयान फ़रमाने के बाद लिखते हैं कि मैं उस शख़्स को ईमान वाला नहीं समझता। उस शख़्स के दिल में ईमान कैसे ठहर सकता है ? जो अहले बैते नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम के घर वालों को शहीद किये जाने पर ख़ुदा का शुक्र अदा करे। मैं अल्लाह व रसूल की बारगाह में उस बे दीन शख़्स से ज़्यादा दुश्मन अबू जहल मलऊन को नहीं समझता। मिलख़सन (बरकाते आले रसूल, स.222)

ऐ ईमान वालो ! बुज़ुर्गों की बातों को सुनो और अपने

ईमान की हिफ़ाज़त की फ़िक्र करो। जब हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के क़त्ल व शहीद होने पर जो शख़्स ख़ुश होता है और शुक्र अदा करता है तो ऐसे शख़्स के बारे में बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि वह शख़्स बे दीन और बे ईमान है और वह शख़्स अबू जहल मलऊन से ज़्यादा ख़ुदा व रसूल का दुश्मन है।

जब हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के क़त्ल होने पर ख़ुश होने वाला शख़्स बे दीन और बे ईमान है और अबू जहल से बढ़कर ख़ुदा व रसूल का दुश्मन है तो ख़ुद यज़ीद नापाक जिसने हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो को तीन दिन तक भूका प्यासा रखकर क़त्ल करने का हुक्म दिया और जश्न मनाया हो, ला रैब- यज़ीद नापाक बे दीन है। बे ईमान है और अबू जहल मलऊन से ज़्यादा ख़ुदा व रसूल का दुश्मन है।

अब भी कोई शख़्स अगर यज़ीद नापाक को अमीरुल मोमिनीन और रज़ियल्लाहो तआला अन्हो व रहमतुल्लाहि तआला अलेहे कहता है तो वह शख़्स बड़ा बद नसीब है और हम ग़ुलामाने हुसैन पर लाज़िम है कि ऐसे फ़िरक़ा वालों से दूर रहें और अपने ईमान की हिफ़ाज़त की फ़िक्र करें।

दूसरी आयते करीमा-

اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ اَهْلَ الْبَيْتِ وَ يُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيْرًا

तर्जमा : ऐ अहले बैत यानी ऐ नबी के घर वालो! अल्लाह तआला तो यही चाहता है कि तुमसे हर नापाकी दूर फ़रमा दे और तुम्हें पाक करके ख़ुब सुथरा कर दे। (पारा22, रूकूअ् 1)

इमाम जोहरी ने फ़रमाया- ना पसंदीदा चीज़ को ''रिज्स'' कहते हैं ख़्वाह वह अमल हो या ग़ैर अमल, एक रिवायत के मुताबिक़ ''रिज्स'' से मुराद शैतान है और बाज़ ने ''रिज्स''

का माना शक लिया है। हर रिवायत के लिहाज़ से आयते करीमा से ज़ाहिर व साबित हो गया कि अल्लाह तआला ने अपने प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के घर वालों को शैतान के शक से और हर ना पसंदीदा चीज़ों से पाक व साफ़ रखा है। (बरकाते आले रसूल, स.32)

इस आयते करीमा में अहले बैत से मुराद कौन हैं?

बेशुमार रिवायतों से साबित है कि हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तशरीफ़ लाए और आपके साथ हज़रत मौला अली और हज़रत फ़ातिमतुज़्ज़ेहरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा को अपने क़रीब सामने बिठाया और इमाम हसन और इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा को अपनी गोद में बिठाया फिर इन चारों नुफ़ूसे क़ुदसिया पर चादर मुबारक डाल दी और यह आयते करीमा तिलावत की।

और एक रिवायत में है कि आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही व सल्लम ने अपनी चादरे मुबारक में उन चारों यानी हज़रत अली व हज़रत फ़ातिमा और हज़रत इमाम हसन और इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम को लेकर यूँ दुआ की।

اَللّٰهُمَّ هٰؤُلَاءِ اَهْلُ بَيْتِىْ۔

ऐ अल्लाह यह सब मेरे अहले बैत हैं।

यानी या अल्लाह तआला अली व फ़ातिमा और हसन व हुसैन (रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम) यह चारों मेरे अहले बैत (घर वाले) हैं। (मुस्लिम शरीफ़, बरकाते आले रसूल, स.34)

इस रिवायत से मालूम हुआ कि आयते करीमा में जो अहले बैत फ़रमाया गया है इससे मुराद हज़रत अली व फ़ातिमा और इमाम हसन और इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम मुराद हैं। इन्हीं चारों हज़रात को अहले बैत कहा जाता है।

हज़रात ! कुरआन शरीफ़ में अल्लाह तआला ने अहले बैत यानी नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के घर वालों (जिनमें हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो भी शामिल हैं) का तज़किरा किस शान और महब्बत से फ़रमाया।

अब हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अंन्हो की अज़मत व महब्बत अपने प्यारे रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़बाने मुबारक से सुनें।

हदीस शरीफ़ : नजरान के ईसाइयों से मुबाहला के लिये हज़रत सअ्द बिन वक़ास जन्नती सहाबी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का बयान है कि हमारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जब हज़रत अली हज़रत फ़ातिमतुज़्ज़हरा, हज़रत इमाम हसन, हज़रत इमामे हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम को हमराह ले कर घर से बाहर निकले तो यह फ़रमाया कि–

اَللّٰھُمَّ ھٰٓؤُلَاۤءِ اَھْلُ بَیْتِیْ۔

या अल्लाह तआला यह सब मेरे अहले बैत हैं। (मुस्लिम शरीफ, मिश्कात शरीफ़ स,568)

यानी या अल्लाह तआला अली व फ़ातमा और हसन व हुसैन यह चारों मेरे अहले बैत (घर वाले) हैं।

ऐ ईमान वालो ! प्यारे मुस्तफ़ा जाने रहमत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के रिश्ते दार, अहले बैत कौन लोग हैं ?

हदीस शरीफ़ से साबित हो गया कि हज़रत मौला अली व फ़ातिमतुज़्ज़हरा और हज़रत इमाम हसन और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम महबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के रिश्ते दार और अहले बैत हैं।

अहले बैत की मुहब्बत, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की मुहब्बत है

हदीस शरीफ़ 1 : हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबबास रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत है कि हमारे आक़ा सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया लोगो! अल्लाह तआला से मुहब्बत रखो इस लिये कि वह तुम्हारा रब है और वह तुम्हें नेअ्मत व दौलत अता फ़रमाता है।

وَاَحِبُّوْنِیْ لِحُبِّ اللّٰہِ وَاَحِبُّوْا اَھْلَ بَیْتِیْ لِحُبِّیْ

और मुझ से मुहब्बत रखो अल्लाह तआला की मुहब्बत की वजह से और मेरे अहले बैत से मुहब्बत करो मेरी मुहब्बत की वजह से – (तिर्मिज़ी शरीफ़, मिश्कात शरीफ़,स.573)

हदीस शरीफ़ 2 : हमारे प्यारे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

لَا یُؤْمِنُ عَبْدٌ حَتّٰی اَکُوْنَ اَحَبَّ اِلَیْہِ مِنْ نَّفْسِہٖ اِلٰی اٰخِرِ الْحَدِیْثِ...

यानी कोई शख्स मोमिने कामिल नहीं हो सकता जब तक कि मुझे अपनी जान से मेरी औलाद (यानी इमामे हसन और इमामे हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा) को अपनी औलाद से, मेरे घर वालों को अपंने घर वालों से और मेरी ज़ात को अपनी ज़ात से ज़्यादा महबूब न रखे।

(अश्शरफुल मुअय्यीद स. 85 ब हवाला तबरानी शरीफ़)

हदीस शरीफ़ 3 : नबिये रहमत शफ़ीए उम्मत सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत इमामे हुस्न और हज़रत इमामे हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा के हाथ को अपने हाथ में लिया और फ़रमाया –

مَنْ اَحَبَّنِیْ وَاَحَبَّ ھٰذَیْنِ وَاُمَّھُمَا وَاَبَاھُمَا کَانَ مَعِیَ فِیْ دَرَجَتِیْ یَوْمَ الْقِیَامَۃِ

यानी जिस ने मुझ से मुहब्बत की और इन दोनों यानी इमामे हसन और इमामे हुसैन से और उन की मां सैयेदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा और उनके वालिद अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम से मुहब्बत कीतो वह शख़्स क़ियामत के रोज़ मेरे साथ मेरे दरजे में होगा। (अश्शरफुल मुअय्यीद, स.86 बहवाला इमाम अहमद)

हदीस शरीफ़ 4 : हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने कअ्बा शरीफ़ का दरवाज़ा पकड़ कर फ़रमाया कि मैं ने अपने प्यारे रसूल सल्लल्लाहो तआला अलहि व आलिही वसल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है।

اَلاَ اِنَّ مَثَلَ اَهْلِ بَيْتِىْ فِيْكُمْ مَثَلُ سَفِيْنَةِ نُوْحٍ مَنْ رَّكِبَهَا نَجَاوَمَنْ تَخَلَّفَ عَنْهَا هَلَكَ

यानी आगाह हो जाओ कि मेरे अहले बैत की मिसाल तुम लोगों के लिये नूह अलैहिस्सलाम की कश्ती की तरह है जो शख़्स उसमें सवार हुआ उस ने नजात पाई और जो शख़्स उस में सवार न हुआ वह हलाक हुआ। (मिशकात शरीफ, स.573)

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का बयान है कि हमारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : اَصْحَابِىْ كَالنُّجُوْمِ بِاَيِّهِمْ اِقْتَدَيْتُمْ اِهْتَدَيْتُمْ

यानी मेरे तमाम सहाबा सितारों के मानिन्द हैं उन में से तुम जिस की इक़्तिदा करोगे हिदायत पाओगे। (मिश्कात, स.554)

हज़रत अल्लामा अली क़ारी अलैहि रहमतुल बारी फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला का एहसान है कि हम हले सुन्नत व जमाअत मुहब्बते अहले बैत की कश्ती पर सवार हैं और हिदायत के रोशन सितारे हज़रात सहाबये किराम रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम से हिदायत हासिल कर रहे हैं। लिहाज़ा हम लोग क़ियामत की होलनाकियों से और जहन्नम के अज़ाब से

महफ़ूज़ रहेंगे। (मिरक़ात, जि5, स.610)

ऐ ईमान वालो ! हमारे सरकार अहमदे मुख़्तार सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अहले बैत की मिसाल हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की कश्ती से दिया। मतलब यह है कि तूफ़ाने नूह अलैहिस्सलाम आया और जो शख़्स कश्ती-ए-नूह अलैहिस्सलाम में सवार हो गया वह शख़्स तूफ़ान में बरबाद व हलाक होने से बच गया।

इसी तरह क़ियामत का तूफ़ान आने वाला है। जो शख़्स आज इस दुनिया में मुहब्बते अहले बैत की कश्ती में सवार रहेगा वह शख़्स बरोज़े क़ियामत तूफ़ाने क़ियामत की तबाह कारियों और बरबादियों से हलाक व बरबाद होने से महफ़ूज़ हो जाएगा।

याद रखो और जान लो ! कि हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने अपनी कश्ती में उसी शख़्स को बिठाया जो शख़्स मोमिन था। लाकलाम। बे शक व शुबह मुहब्बते अहले बैत की कश्ती में वह शख़्स सवार होगा जो मोमिन सुन्नी मुसलमान होगा और सुन्नी मुसलमान वह शख़्स है जो मुहब्बते अहले बैत के साथ हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर - हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म, हज़रत उस्माने ग़नी जुन्नूरैन, हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा, उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीक़ा और तमाम सहाब-ए-किराम रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम से भी मुहब्बत व उलफ़त रखता हो। इसी लिये राफ़ज़ी व ख़ारजी और जुमला मुख़ालिफ़ीने अहले सुन्नत बरोज़े क़ियामत मुहब्बत अहले बैत की कश्ती में सवार ही नहीं हो सकते। वहाँ तो सहाब-ए-किराम और अहले बैत अतहार की मुहब्बत का परवाना देखा जाएगा। इस के बाद सवार किया जाएगा और तूफ़ाने क़ियामत उन गुस्ताख़ों को हलाक व बरबाद कर देगा और वह लोग जहन्नम के मुस्तहिक़ क़रार पाऐंगे। ख़ूब फ़रमाया इमाम अहमद रज़ा सरकारे आला हज़रत

फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने

आज ले उन की पनाह आज मदद मांग उन से
फिर न मानेंगे क़ियामत में अगर मान गया

अहले सुन्नत का है बेड़ा पार असहाबे हुज़ूर
नज्म हैं और नाओ है इतरत रसूलुल्लाह की

हदीस शरीफ़ 5 : हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा से रिवायत है कि मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को हज्जतुल वदाअ् यानी आख़री हज के मौक़े पर अरफ़ा के दिन देखा कि हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अपनी ऊंटनी क़िसवा पर सवार हैं और ख़ुत्बा दे रहे हैं। मैं ने आप को फ़रमाते हुए सुना :

ऐ लोगो! اِنِّیْ تَارِکٌ فِیْکُمُ الثَّقَلَیْنِ کِتَابُ اللّٰہِ وَعِتْرَتِیْ

तर्जमा : बे शक मैं तुम्हारे बीच छोड़ रहा हूँ दो भारी और वज़नदार चीज़ें, कुरआने करीम और मेरी औलाद।

जब तक तुम उन दोनों को पकड़े रहोगे कभी गुमराह न होगे।
(मिश्कात शरीफ़, स.568)

ऐ ईमान वालो ! रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हुक्म फ़रमाया था कि कुरान शरीफ़ और मेरी औलाद का दामन मज़बूती से पकड़े रहना कभी गुमराह न होंगे

लेकिन यज़ीद नापाक ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के बेटे हज़रत इमामे हुसैन रज़ियल्लातो आला अन्हो से मुहब्बत करना और उन के दामन से वाबस्ता रहना तो दर किनार इन के नापाक हुक्म से हज़रत इमामे हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो को तीन दिन तक भूका और प्यासा रखा गया। उन के बच्चों को बे दर्दी से क़त्ल किया गया। नबी की बेटियों का सुहाग उजाड़ा गया। उन के ख़ेमों में आग लगाई गई और बे दर्दी के साथ नवासए रसूल हज़रत

इमामे हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो को शहीद किया। उन की लाशों पर घोड़े दौड़ाए।

अब फ़ैसला आप के हाथ में है कि ऐसे बद बख़्त ज़ालिम, यज़ीद नापाक की तारीफ़ करोगे या नवासए रसूल, जन्ती जवानों के सरदार इमामे हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से मुहब्बत व उलफ़त करो गे ? और जन्नती जवानों के सरदार के साथ जन्नत में जाओगे।

हुसैन मेरे और मैं हुसैन का हूँ

हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

حُسَیْنٌ مِنِّیْ وَاَنَا مِنَ الْحُسَیْنِ اَحَبَّ اللّٰہُ مَنْ اَحَبَّ حُسَیْنًا

हुसैन मुझ से हैं और मैं हुसैन से हूँ अल्लाह तआला उस शख़्स से मुहब्बत करता है जो हुसैन से मुहब्बत करता है (रज़ियल्लाहो तआला अन्हो) (तिर्मिज़ी शरीफ़, जि.2, स.219, मिश्कात शरीफ़, स.571)

हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो जन्नती मर्द हैं

हमारे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

जिसे यह पसन्द हो कि किसी जन्नती मर्द को देखे (एक रिवायत में है) जन्नती जवानों के सरदार को देखे वह हुसैन बिन अली को देख ले। (नूरुल अबसार, स.114, बरकाते आले रसूल, स.144)

नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की दुआ आशिक़े हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के लिये

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मस्जिद में तशरीफ़ लाए और फ़रमाया मेरा छोटा बच्चा कहाँ है? (इतने में) हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो दौड़ते हुए आए और अपने नाना जान सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की गोद में बैठ गए और अपनी

उंगलियाँ दाढ़ी मुबारक में दाख़िल कर दी। हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उन के मुँह का बोसा लिया और फ़रमाया : اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَحِبُّهٗ فَاَحِبَّهٗ وَاُحِبُّ مَنْ يُّحِبُّه

यानी ऐ अल्लाह तआला मैं हुसैन से मुहब्बत करता हूँ तू भी हुसैन से मुहब्बत फ़रमा और उस शख़्स से भी मुहब्बत कर जो शख़्स हुसैन से मुहब्बत करे।

(नूरूल अब्सार, स.114, बरकाते आले रसूल, स.145)

एक रिवायत में है कि मैं उस शख़्स को दुश्मन जानता हूँ जो मेरे हुसैन से दुश्मनी रखता है ऐ अल्लाह तआला तू भी उस शख़्स को दुश्मन जान जो हुसैन का दुश्मन है।

ऐ ईमान वालो ! ख़ूब सोच लो फिर फ़ैसला करो कि यज़ीद नापाक ने मैदाने करबला में मेरे आक़ा इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के साथ जिस सफ़्फ़ाकी और बे रहमी का मुज़ाहिरा किया है और उन का ख़ून बहाया है यह आले नबी और औलादे अली से खुली हुई अदावत व दुश्मनी नहीं तो और क्या है। और हदीस शरीफ़ की रोशनी में साबित हुआ कि इमाम हुसैन का दुश्मन यज़ीद नापाक अल्लाह व रसूल का दुश्मन है।

ऐसे दुश्मने ख़ुदा और रसूल यानी यज़ीद नापाक को अमीरुल मोमिनीन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो और रहमतुल्लाहे तआला अलैहि कहना ईमान की ख़राबी और जन्नत से महरूमी का नतीजा है। (अल अमान वल हफ़ीज़)

हसन और हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा जन्नती जवानों के सरदार हैं

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

اَلْحَسَنُ وَالْحُسَيْنُ سَيِّدَ اشَبَابِ اَهْلِ الْجَنَّةِ

हसन और हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा जन्नती जवानों के सरदार हैं। (तिर्मिज़ी, जि.2,स.218, मिश्कात, स.570)

हसन व हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा जन्नती फूल हैं

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा से जब इराक़ी लोगों ने हालते एहराम में मक्खी या मच्छर मारने का मस्अला पूछा तो आपने फ़रमाया उन इराक़ वालों को देखो मुझ से मक्खी मारने का मस्अला पूछते हैं हालाँकि उन्होंने नवासए रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को क़त्ल किया है और फिर उन्होंने बयान किया।

وَقَالَ النَّبِیُّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ: هُمَا رَیْحَانَتَایَ مِنَ الدُّنْیَا

(بخاری شریف، ج۱،ص۵۲۰)

और फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने कि इमाम हसन और इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा यह दोनों दुनिया के मेरे दो फूल हैं

इसी से मिलती जुलती रिवायत मिश्कात शरीफ़ स. 570 और कन्ज़ुल अम्माल जि.7,स.110 पर भी है।

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं कि हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का इमामे हसन और इमामे हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा के साथ प्यारे व मुहब्बत का यह आलम था कि.

فَیَشُمُّهُمَا وَیَضُمُّهُمَا۔ (ترمذی، ج۲،ص۲۲۰)

यानी हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उन दोनों शहज़ादों को सूंघते थे और अपने सीना मुबारक से चिमटाया करते थे।

हाए अफ़सोस ! सद अफ़सोस !! प्यारे रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मेरे आक़ा हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो को गोद में लेते हुए फ़रमाते कि हुसैन मेरे लिये दुनिया का फूल हैं उन की ज़बान को चूसते जैसे खजूर चूसा जाता है। इस ज़बाने मुबारक में तीर पैवसत किया गया। दन्दाने मुबारक टूट गए। ज़बान छलनी हो गई। कभी उन के रुख़सारे अनवार और कभी पैशानी मुबारका का बोसा प्यार व मुहब्बत से लेते। इसी रुखे ताबाँ और नूरानी जबीन को जो बोसा गाहे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम थी तीरों से ज़ख्मी किया गया, उन के गुलूए अक़दस यानी मुबारक गला जिस को अकसर आक़ा सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम चूमा करते थे। इस नूरानी गले पर ख़न्जर चलाया गया उनका जिस्मे नूर जो आक़ा के लिये फूल था। जिस को बार बार सूंघते और फ़रमाते मेरा फूल है। प्यारे नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के इस फूल के एक एक पत्ते को मैदाने करबला में यज़ीद नापाक ने तोड़ कर मसल दिया हो। इतने बड़े सफ़्फ़ाक व ज़ालिम बद किरदारो बद अफ़आल रसूल और क़ातिले नवासा रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को रहती दुनिया तक आशिक़ाने नबी और गुलामाने हुसैन मुआफ़ नहीं कर सकते और ऐसे बद शख़्स के नाम के साथ अमीरुल मोअमिनीन, रज़ियल्लाहो तआला और रहमतुल्लाहे तआला अलैहि जैसे अलक़ाब चस्पां करने वाला मोमिन व मुसलमान नहीं हो सकता। ऐसा काम कोई बे दीन व मुनाफ़िक़ ही कर सकता है।

अली व फ़ातिमा और हसन व हुसन रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम की मुहब्बत का इनआम व इकराम

अल्लाह तआला नबी, उम्मत के शफ़ीअ् रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

١) مَنْ مَّاتَ عَلٰى حُبِّ اٰلِ مُحَمَّدٍ مَّاتَ شَهِيْدًا

जो शख़्स आले रसूल की मुहब्बत पर फ़ोत हुआ उसने शहादत की मौत पाई।

٢) اَلَا وَمَنْ مَّاتَ عَلٰى حُبِّ اٰلِ مُحَمَّدٍ مَّاتَ مَغْفُوْرًا لَّهٗ

आगाह हो जाओ जो शख़्स आले रसूल की मुहब्बत पर मरा उस शख़्स के तमाम गुनाह बख़्श दिये गये

٣) اَلَا وَمَنْ مَّاتَ عَلٰى حُبِّ اٰلِ مُحَمَّدٍ مَّاتَ تَائِبًا

होशियार हो जाओ ! जो शख़्स आले रसूल की मुहब्बत पर इन्तिक़ाल करे वह तौबह कर के मरा।

٤) اَلَا وَمَنْ مَّاتَ عَلٰى حُبِّ اٰلِ مُحَمَّدٍ مَّاتَ مُؤْمِنًا مُّسْتَكْمِلَ الْاِيْمَانِ

आगाह हो जाओ जिस शख़्स ने आले रसूल की मुहब्बत पर इन्तिक़ाल किया वह कामिल ईमान के साथ फ़ोत हुआ और आगे फ़रमाया गया है कि–

जो शख़्स आले रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम यानी अली व फ़ातमा और हसन व हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम की मुहब्बत पर फ़ौत हुआ उस की क़ब्र में जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और उस शख़्स को ऐसी इज़्ज़त के साथ जन्नत में ले जाया जाएगा जेसे दुल्हन को दूल्हा के घर भेजा जाता है और उस की क़ब्र को रहमत के फ़रिश्तों के लिये

ज़ियारत गाह बना दिया जाता है।

(तफ़सीरे कबीर, जि.7, स.390, बरकाते आले रसूल, स.223)

ऐ ईमान वालो ! हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो और आप के नाना जान रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम और आप के वालिद हज़रत अली और आप की माँ हज़रत फ़ातिमतुज़्ज़हरा और आप के भाई हज़रत इमामे हसन रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम और क़ियामत तक जितने भी आले रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम होंगे उन की मुहब्बत का सिला व बदला कितना बड़ा और बहतर है मगर अल्लाह तआला जिस शख्स से राज़ी है उस ख़ुश नसीब को आले रसूल हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की मुहब्बत की दौलत अता फ़रमाता है।

आशिक़े रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम इमामे अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो तहरीर फ़रमाते हैं।

हदीस शरीफ़ : इब्ने असाकिर अमीरुल मोमिनीन हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत करते हैं कि हमारे प्यारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

जो शख्स मेरे अहले बैत यानी अली व फ़ातिमा और हसन व हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम में किसी के साथ अच्छा सुलूक करेगा मैं बरोज़े क़ियामत उसका सिला उसे अता फ़रमाऊँगा।

एक दूसरी रिवायत में यूँ है, जो शख्स इन में से किसी के साथ दुनिया में नेकी करेगा उसका बदला देना मुझ पर लाज़िम है जब वह शख्स बरोज़े क़ियामत मुझसे मिले।

हदीस शरीफ़ को बयान फ़रमा कर आशिक़े रसूल मुजद्दीदे

आज़म प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा सरकार आला हज़रत रज़ियल्लाहो तआला अन्हो आगे तहरीर फ़रमाते हैं :

अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर क़ियामत के दिन वह क़ियामत का दिन जो सख्त ज़रूरत और हजत का दिन और हम जैसे मोहताज और सिला अता फ़रमाने को हमारे प्यारे रसूल प्यारे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जैसा साहिबुत्ताज, ख़ुदा जाने क्या कुछ दें और कैसा निहाल फ़रमा दें। एक निगाहे लुत्फ़ उनकी जुमाला मुहिम्माते दो जहाँ को बस है, बल्कि ख़ुद यही सिला करोरों से आला है। जिसकी तरफ़ कल्मये करीमा इज़ा यक़ीनी इशारा फ़रमाता है, ब लफ़्ज़े इज़ा ताबीर फ़रमाना बि हम्दिल्लाह ब रोज़े क़ियामत वा दए विसाल व दीदारे महबूबे ज़ुलजलाल का मुज़्दा सुनाता है।

मुसलमानों और क्या दरकार है, दौड़ो और इस दौलत व सआदत को हासिल कर लो। व बिल्लाहित्तौफ़ीक़

(फ़तावा रज़विया शरीफ़, जि.4 स.489)

अफ़ज़लुल बशर बादल अम्बिया, अमीरुल मोमिनीन हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की नज़र में इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का मक़ाम व मर्तबा

एक दिन की बात है कि हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो तशरीफ़ ला रहे थे और आपका बचपन है, हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने आपको अपनी गोद में उठा लिया और इरशाद फ़रमाया –

وَالَّذِیْ نَفْسِیْ بِیَدِہٖ لَقَرَبَةُ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ اَحَبُّ اِلَیَّ اَنْ اَصِلَ مِنْ قَرَبَتِیْ

यानी ख़ुदा की क़सम जिसके क़ब्ज़ा–ए–क़ुदरत में मेरी जान

है, मुझको अपने रिश्तेदारों से हुज़ूर सल्ललल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के अक़रबा (यानी घर वाले) ज़्यादा पसन्द हैं। (बुख़ारी शरीफ, अश्शरफुल मुअय्यीद, स.87)

और एक रिवायत में है कि हमारे आक़ा सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के रिश्तेदारों के साथ अच्छा सुलूक करना, मुझे अपने रिश्तेदारों के साथ अच्छा बरताव करने से ज़्यादा पसन्द है। (अश्शरफुल मुअय्यीद, स.87)

ऐ ईमान वालो ! यज़ीद नापाक और उसके मानने वाले अगर आले रसूल और नवासा-ए-रसूल हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की क़द्रो मंज़िलत को न जाने तो इससे उनकी शान में कुछ फ़र्क़ नहीं आता।

हाँ ! वह लोग जो क़द्रो मंज़िलत वाले हैं जैसे कि अफ़ज़लुल बशर बादल अम्बिया हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो जो तमाम सहाबा के इमाम व मुक़्तदा हैं और सुब्हे क़ियामत तक अब कोई शख़्स उनके मक़ाम व मर्तबे तक नहीं पहुँच सकता है।

वह हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने आले रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम और नवासा-ए-रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो को गोद में लेकर फ़रमाते हैं कि मेरी औलाद से बहुत ज़्यादा बलन्द व बाला मक़ाम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की आल व औलाद का है।

बे इजाज़त जिनके घर जिब्रील भी आते नहीं
क़द्र वाले जानते हैं क़द्रो शाने अहले बैत
बे अदब गुस्ताख़ फ़िरक़े को सुनादे ऐ हसन
यूँ बयाँ करते हैं सुन्नी दास्ताने अहले बैत

(उस्ताज़े ज़मन मौलाना हसन रज़ा, बरैलवी)

और सरकार आला हज़रत रज़ियल्लाहो अन्हो फ़रमाते हैं-

तेरी नस्ले पाक में है बच्चा बच्चा नूर का
तू है ऐने नूर तेरा सब घराना नूर का

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की नज़र में इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का मक़ाम व मर्तबा

मशहूर मुहद्दिस हज़रत हाफ़िज़ बिन हजर अस कलानी तहरीर फ़रमाते हैं कि शहज़ादा-ए-रसूल हज़रत इमाम हुसैन बिन अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने बयान फ़रमाया कि मैं अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के पास उस वक़्त गया जब वह मिम्बर पर ख़ुत्बा दे रहे थे, मैं मिम्मबर पर चढ़ गया और उनसे कहा :

اِنْزِلْ عَنْ مِنْبَرِ اَبِیْ وَاذْهَبْ اِلٰی مِنْبَرِ اَبِیْکَ

यानी मेरे बाप के मिम्बर से उतर जाओ और अपने बाप के मिम्बर पर जाओ। अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फ़रमाया :

لَمْ یَکُنْ لِاَبِیْ مِنْبَرٌ

मेरे बाप का मिम्बर नहीं था और मुझे गोद में उठा लिया और अपने पास बिठा लिया और मैं अपने पास पड़ी हुई कंकरियों से खेलता रहा। जब आप ख़ुत्बा देकर मिम्बर से उतरे तो मुझे अपने साथ घर ले गए और मुझसे फ़रमाया कितना अच्छा हो अगर आप कभी कभी मेरे घर तशरीफ़ लाते रहें।

(अश्शरफुल मुअय्यीद, स.93)

ऐ ईमान वालो ! हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के बड़े प्यारे सहाबी और ख़लीफ़ा हैं।

सरकार सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : उमर फ़ारूक़ से शैतान भागता है। और फ़रमाया अगर मेरे बाद कोई नबी होता तो उमर फ़ारूक़ नबी होते। हज़रत उमर फ़ारूक़ की राय की ताईद में बहुत सी आयतें नाज़िल हुई, ऐसे अज़ीमुल मरतबत, अद्लो इंसाफ़ की ममलकत के ताजदार अमीरूल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की नज़र में आले रसूल नवासा-ए-रसूल हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की बड़ी इज़्ज़त और क़द्रो मंज़िलत है जैसा कि बयान हुआ।

अब अगर यज़ीद नापाक और उसके मानने वाले मुनाफ़ेक़ीन हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की अज़मत व बुज़ुर्गी को न माने तो इससे उनके बलन्दो बाला मक़ाम पर कोई असर नहीं होता।

अल्लाह व रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाह में उनका जो मक़ाम व मर्तबा है क़ुरआनो हदीस से ज़ाहिर और साबित है और सहाबा-ए-किराम से लेकर आज तक तमाम ईमान वाले उनकी फ़ज़ीलत व बुज़ुर्गी को पहचानते हैं और सुब्हे क़ियामत तक और उनकी महब्बत व उलफ़त का दम भरते रहेंगे। इंशाअल्लाहो तआला

आले रसूल से महब्बत और उनकी ख़िदमत अमीरूल मोमिनीन भी करते हैं

अबुल फ़रज अस्फ़हानी मुतअद्दिद लोगों से रिवायत करते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह जो बेटे हैं हज़रत हसन के, जो बेटे हैं हज़रत इमाम हसन मुज्तबा के, जो बेटे हैं हज़रत मौला अली के। (रजियल्लाहो तआला अन्हुम)

अमीरूल मोमिनीन हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के पास गए। हज़रत उमर बिन

अब्दुल अज़ीज़ ने उन्हें ऊँची जगह पर बिठाया और उनकी ज़रूरतें पूरी की फिर उनके हाथ पेर दबाए और उनकी ख़िदमत की। ख़िदमत करने के बाद आपने आले रसूल हज़रत अब्दुल्लाह बिन हसन से दरख़्वास्त की कि शफ़ाअत करने के लिये मुझे और मेरी इस ख़िदमत व महब्बत को याद रखना। जब नबी के बेटे तशरीफ़ ले गए तो उनकी क़ौम के कुछ लोगों ने उन्हें मलामत की, बुरा भला कहा कि आप अमीरूल मोमिनीन हैं और आपने एक नो उम्र बच्चे के हाथ और पेर को दबाया, इसी तरह उस बच्चे की ख़िदमत की और ऐसा सुलूक किया।

तो अमीरूल मोमिनीन हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फ़रमाया, मुझसे मोअ्तबर शख़्स ने बयान किया है, जैसे मैं ख़ुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़बाने मुबारक से सुन रहा हूँ, आप सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया

फ़ातिमा (रज़ियल्लाहो तआला अन्हा) मेरी लख़्ते जिगर हैं और फ़ातिमा की ख़ुशी का सबब मेरी ख़ुशी का बाइस है और मैं जानता हूँ कि अगर हज़रत सैयदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा तशरीफ़ फ़रमा होतीं और अपनी आँखों से देखतीं तो मैंने जो कुछ ख़िदमत व महब्बत उनके बेटे के साथ किया है इससे वह ख़ुश होतीं।

लोगों ने आपसे पूछा कि आपने एक सैयद के हाथ पेर और जिस्म को दबा कर जो उनकी ख़िदमत की है और जो कुछ आपने उनसे कहा है उसका क्या मतलब है ? तो हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फ़रमाया :

ऐ लोगो सुनो ! रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिहि वसल्लम के ख़ानदान का हर फ़र्द (यानी हर सैयद, हर आले रसूल, क़ियामत के दिन) गुनाहगार उम्मत की शफ़ाअत करेगा। मुझे उम्मीद है कि मुझे भी उनकी शफ़ाअत

हासिल होगी। (बरकाते आले रसूल, स.260-61)

ऐ ईमान वालो ! हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो वह खलीफ़ा-ए-बरहक़ हैं जिनकी ख़िलाफ़त को ख़िलाफ़ते राशेदा कहा जाता है। आप बहुत ही नेक व सालेह और मुत्तक़ी परेहज़गार और आशिक़े रसूल थे। आपके दौरे ख़िलाफ़त में शेर और बकरी एक घाट पर पानी पीते थे, आपने अद्ल व इंसाफ़, खुदा तर्सी व सुन्नत पर अमल और इश्क़े रसूल व ख़ान्दाने रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का जो सुबूत पेश किया है वह रहती दुनिया के लिये मीनारा-ए-नूर और चरागे हिदायत है।

(जब ऐसी बुज़ुर्गी और अज़मत व सुन्नत के मालिक अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो प्यारे नबी के ख़ान्दान के एक नो उम्र बच्चे के साथ मोहब्बत व उलफ़त का यह आलम है कि आप उनके हाथ पेर दबाते हैं और उनकी ख़िदमत करते हैं और उनसे अर्ज़ करते हैं कि क़ियामत के मैदान में मेरी मोहब्बत और ख़िदमत का भरम रख लेना और मेरी शफ़ाअत करना।

जब ख़ान्दाने रसूल के एक छोटे से बच्चे के साथ वक़्त के जलीलुल क़द्र खलीफ़ा की ख़िदमत व मोहब्बत का यह हाल, अगर वह हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की पाक सोहबत को पाते तो ख़िदमत व मोहब्बत का क्या आलम होता

ऐ ईमान वालो ! हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की मोहब्बत का सिला जन्नत है और इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की दुश्मनी का बदला जहन्नम है। हमारे आक़ा प्यारे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के अहले बैत (आले रसूल) यानी हज़रत अली व फ़ातिमा और इमाम हसन व हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम की महब्बत व उलफ़त पर जो शख़्स फ़ोत हुआ वह

जन्नती है। (ऊपर हदीस शरीफ़ बयान की जा चुकी है)

और जो शख़्स उनके बुग़्ज़ व अदावत पर मरा वह दोज़ख़ का हक़दार और जहन्नमी है। हदीस शरीफ़ मुलाहज़ा फ़रमाइये :

(1) **हदीस शरीफ़ :** हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया -

لَوْ اَنَّ رَجُلاً صَعِدَ بَيْنَ الرُّكْنِ وَالْمَقَامِ وَصَلّٰى وَصَامَ ثُمَّ مَاتَ وَهُوَ مُبْغِضٌ لِاَهْلِ بَيْتِ مُحَمَّدٍ دَخَلَ النَّارَ (طبرانی) (بحوالہ الشرف المؤبد، ص۹۲)

यानी अगर कोई शख़्स रुक्ने अस्वद और मक़ामे इब्राहीम के दरमियान चला जाए और नमाज़ पढ़े और रोज़ा रखे फिर वह शख़्स मर जाए इस हाल में कि वह शख़्श अहले बैत यानी अली व फ़ातिमा और हसन व हुसैन (रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम) से बुग़्ज़ व दुश्मनी रखता है तो वह शख़्स जहन्नम में जाएगा। (तबरानी)

(2) **हदीस शरीफ़ :** रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : खूब ग़ौर से सुन लो ! जो शख़्स आले रसूल के बुग़्ज़ पर मरा वह क़ियामत के दिन इस हाल में आएगा कि उसकी दोनों आँखों के दरमियान लिखा होगा, अल्लाह तआला की रहमत से ना उम्मीद।

(3) **हदीस शरीफ़ :** ख़बरदार ! जो शख़्स आले रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की दुश्मनी पर मरा वह शख़्स काफ़िर मरा।

(4) **हदीस शरीफ़ :** कान खोल कर सुन लो ! जो शख़्स आले रसूल के बुग़्ज़ व अदावत पर मरा वह जन्नत की खुश्बू से महरूम होगा।

(तफ़्सीरे कबीर, जि. 7 स.390, बरकाते आले रसूल, स.224)

अहले बैत और आले रसूल कौन लोग हैं ?

आलिमे रब्बानी इमाम यूसुफ़ बिन इस्माईल निबहानी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो तहरीर फ़रमाते हैं–

ख़ातूने जन्नत सैयदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा, हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा, हज़रत इमाम हसन, हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम और उनकी औलाद जो क़ियामत तक होगी, अहले बेत हैं और अहले बेत ही आले रसूल हैं। (सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) और बाज़ ने कहा कि वह आपकी उम्मत है जो ईमान लाई और यह नक्ल तवातुर से साबित है। (तफ़्सीरे कबीर जि. 7, स.390, बरकाते आले रसूल, स.224)

ऐ ईमान वालो ! इन अहादीस की रौशनी में यज़ीद नापाक और उसके हम नवाओं का क्या हश्र होगा, जिनका कलिमा पढ़ा उन्ही के नवासे हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के साथ अदावत व दुश्मनी की जो मिसाल क़ायम की है तारीख़ में ऐसी बदतरीन मिसाल नहीं मिलती और न मिलेगी।

फ़ैसला आपके हाथ में है कि यज़ीद नापाक जन्नती है या जहन्नमी ? अगर आपके सीने में ज़र्रा बराबर भी ईमान की रमक़ बाक़ी है तो आपका ईमान आपको यह कहने पर मजबूर कर देगा कि यज़ीद नापाक जहन्नमी और उसके तरफ़दार भी जहन्नमी हैं और आले पाके मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) मेरे आक़ा हज़रत इमान हुसैन जन्नती जवानों के सरदार हैं और आपसे उलफ़त व महब्बत रखने वाले भी जन्नती हैं।

सच फ़रमाया उस्ताज़े ज़मन मौलाना हसन रज़ा बरैलवी ने–
बाग़े जन्नत के हैं बहर मदहख़्वाने अहले बैत
तुम को मुज़्दा नार का ऐ दुश्मनाने अहले बैत

अहले बैते पाक से गुस्ताख़ियाँ बे बाकियाँ
लअनतुल्लाहे अलैकुम दुश्मनाने अहले बैत
बे अदब गुस्ताख़ फ़िरक़े को सुना दे ऐ हसन
यूँ बयाँ करते हैं सुन्नी दास्ताने अहले बैत

हज़रत इमाम हुसैन आदिल हैं

आशिक़े मदीना हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे दहलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो तहरीर फ़रमाते हैं : जो लोग कहते हैं कि यज़ीद अमीरुल मोमिनीन थे और अमीर की इत्तिबाअ् व पैरवी लाज़िम होती है और इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने अमीरुल मोमिनीन यज़ीद की बेअत से इनकार किया और बग़ावत करके गुनाह किया (मआज़ल्लाहि तआला)

उन जाहिल, बे दीन यज़ीदियों में कुछ भी इल्म नहीं कि उस अमीर की इत्तिबाअ् व पैरवी लाज़िम होती जो नेक व सालेह और ईमानदार हो और यज़ीद पलीद वह शख़्स है जिसको तमाम बुज़ुर्गों ने बिल इत्तिफ़ाक़ गन्दा, कमीना, शराबी, ज़ानी और नापाक कहा और बाज़ बुज़ुर्गों ने काफ़िर भी लिखा है। ऐसे शख़्स को शहज़ादा-ए-रसूल हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो अमीरुल मोमिनीन कैसे तस्लीम कर लेते। इस लिये इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो पर फ़र्ज़ था कि यज़ीद नापाक की बैअत से इनकार फ़रमाकर दीने इस्लाम की हिफ़ाज़त के लिये अपनी कुरबानी दें।

(तकमीलुल ईमान, स. 97)

और इसी तरह हज़रत इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाहे तआला अलैहि ने भी लिखा है। (शरह अक़ाइद, स. 110)

हदीस शरीफ़ मुलाहज़ा फ़रमाइये –

जलीलुल क़द्र मुहद्दिस हज़रत अल्लामा अली क़ारी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो तहरीर फ़रमाते हैं कि बाज़ जाहिल जो कहते हैं कि इमाम हुसैन ने यज़ीद से बग़ावत की तो यह

अहले सुन्नत व जमाअत के नज़दीक बातिल है और इस तरह की बोली ख़ारजियों, यज़ीदियों की गढी हुई ख़ुराफ़ात है जो अहले सुन्नत व जमाअत से ख़ारिज हैं। (शरह फ़िक़ह अकबर, स. 87)

हज़रत अबू हूरैरह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

اَعُوْذُبِاللّٰهِ مِنْ اِمَارَةِ الصِّبْيَانِ قَالُوْا وَمَا اِمَارَةُ الصِّبْيَانِ، قَالَ اِنْ اَطِعْتُمُوْهُمْ هَلَكْتُمْ اَیْ فِیْ دِیْنِكُمْ وَاِنْ عَصَیْتُمُوْهُمْ اَهْلَكُوْكُمْ اَیْ فِیْ دُنْیَاكُمْ بِاِزْهَاقِ النَّفْسِ اَوْبِاِذْهَابِ الْمَالِ اَوْبِهِمَا (فتح الباری، ج ۱۳، ص ۸)

मैं लड़कों की इमारत (हुकूमत) से पनाह मांगता हूँ, सहाबा ने अर्ज़ किया लड़कों की इमारत कैसी होगी ? फ़रमाया अगर तुम उनकी इताअत करोगे तो (दीन के मुआमले में) हलाक हो जाओगे और अगर तुम उनकी ना फ़रमानी करोगे तो वह तुम्हें (तुम्हारी दुनिया के बारे में) जान लेकर या माल लेकर या दोनों लेकर हलाकर कर देंगे।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से सुना है फ़रमाया :

یَكُوْنُ خَلْفٌ مِّنْ بَعْدِ سِتِّیْنَ سَنَةً اَضَاعُوْا الصَّلٰوةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوَاتِ فَسَوْفَ یُلْقُوْنَ غَیًّا (البدایہ والنہایہ، ج ۸، ص ۲۳۰)

वह ना ख़लफ़ साठ हिजरी के बाद होंगे जो नमाज़ों को ज़ाए करेंगे और शहवात की पैरवी करेंगे तो वह अनक़रीब ग़य्यि (जहन्नम की एक खतरनाक वादी) में डाले जाएंगे।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत है कि हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया تَعَوَّذُوْا بِاللّٰهِ مِنْ سَنَةِ سِتِّیْنَ وَمِنْ اِمَارَةِ الصِّبْیَانِ

साठ हिजरी के साल और लडकों की इमारत व हुकूमत से अल्लाह की पनाह मांगो। (अल बिदाया वन्निहाया, जि.8, स.231)

ऐ ईमान वालो ! इन अहादीस से वाज़ेह तौर पर साबित हो गया कि उन बद अक्ल और ज़ालिम लडकों की हुकूमत व इमारत सन् 60 हिजरी से शुरू होगी और यज़ीद नापाक सन् 60 हिजरी ही में तख़्त नशीन हुआ और उन आवारा लड़कों की हुकूमत व इमारत का यह आलम होगा कि जो शख़्स उन की इताअत व फ़रमाबरदारी करेगा उस का दीन तबाह व बरबाद हो जाएगा और जो शख़्स उनकी इताअत नहीं करेगा तो उसके जान व माल की तबाही होगी।

हज़रत कअ्ब बिन उजरह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने मुझसे फ़रमाया :

ऐ कअ्ब बिन उजरह ! मैं तुझको बे अक़्लों की हुकूमत से अल्लाह की पनाह में देता हूँ। मैंने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह (सल्लल्लाहो तआला अलैका व आलिका वसल्लम) वह बे अक़्लों की हुकूमत क्या है ? फ़रमाया : अनक़रीब ऐसे ऐसे उमरा (हाकिम) होंगे कि बात करेंगे तो झूट बोलेंगे और अमल करेंगे तो जुल्म करेंगे।

فَمَنْ جَآءَ هُمْ فَصَدَّقَهُمْ بِكِذْبِهِمْ وَاَعَانَهُمْ عَلٰی ظُلْمِهِمْ فَلَیْسَ مِنِّیْ اِلٰی اٰخِرِ الْحَدِیْثِ...... (کنز العمال، ج ۵، ص ۷۷۴)

पस जो उनके पास आकर उनके झूट की तस्दीक़ करेगा और उनके जुल्म पर उनकी मदद करेगा तो वह शख़्स मुझसे नहीं और मैं उससे नहीं।

(और फिर यह फ़रमाया) और न वह शख़्स कल (क़ियामत के दिन) मेरे हौज़े कौसर पर आ सकेगा।

ऐ ईमान वालो ! हज़रत कअ्ब बिन उजरह

रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की रिवायत कर्दा हदीस शरीफ़ से साफ़ तौर पर साबित हो गया कि ज़ालिम और झूटे अमीर व हाकिम की इताअत व पैरवी करने से महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने मना फ़रमाया है।

और यज़ीद नापाक की बद किरादारियाँ और उसका झूट व ज़ुल्म ज़ाहिर हो चुका था जिसकी वजह से शहज़ादा–ए–रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के लिये उसकी बेअत व इताअत से इनकार फ़र्ज़ था और यह भी मालूम था कि यज़ीद नापाक के बेअत से इनकार का नतीजा आसान न होगा और इस इनकार के नतीजे में अद्ल व इन्साफ़ के बादशाह ने घर, कुंबा, अहबाब सबको कुरबान कर दिया और ख़ुद भी कुरबान हो गए लेकिन उम्मत का सौदा नहीं किया बल्कि यज़ीद नापाक की ख़बासत व पलीदी से उम्मत को बचा लिया और अद्ल व इन्साफ़ का परचम बलन्द फ़रमाया और साबित कर दिया कि यज़ीद नापाक व ज़ालिम है अमीरुल मोमिनीन नहीं है। कुतूबे अहादीस में सबसे मुस्तनद किताब सही बुख़ारी शरीफ़ में एक बाब है –

بَابُ قَوْلِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ هَلَاکُ اُمَّتِیْ
عَلٰى يَدَىْ اُغَيْلَمَةٍ سُفَهَآءَ

नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का क़ौल कि मेरी उम्मत की हलाकत बे अक़्ल (अवारा) लड़कों के हाथ से होंगी।

और इसी बाब में यह हदीस है –

हज़रत अबू हूरैरह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत है कि हमारे प्यारे रसूल प्यारे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

هَلَكَةُ اُمَّتِىْ عَلٰى اَيْدِىْ غِلْمَةٍ مِّنْ قُرَيْشٍ فَقَالَ مَرْوَانُ لَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِمْ غِلْمَةً

कि मेरी उम्मत की हलाकत कुरैश के चन्द (अवारा) लड़कों के हाथों से होगी तो यह (सुन कर) मरवान ने कहा उन लड़कों पर अल्लाह की लानत हो।

فَقَالَ اَبُوْهُرَيْرَةَ لَوْ شِئْتَ اَنْ اَقُوْلَ بَنِىْ فُلَانٍ وَّبَنِىْ فُلَانٍ فَفَعَلْتُ

तो अबू हूरैरह ने फ़रमाया अगर मैं चाहूँ तो बता दूँ कि फ़लाँ इब्ने फ़लाँ और फ़लाँ इब्ने फ़लाँ हैं। (बुख़ारी शरीफ़, जि.2, स. 1046)

इसी हदीसे बुख़ारी की शरह में जलीलुल क़द्र मुहद्दिस अल्लामा हाफ़िज़ इमाम इब्ने हजर असक़लानी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं –

तर्जुमा हदीस : मैं कहता हूँ कि सबी और ग़लीम (लड़का) का लफ़्ज़ तसग़ीर के साथ उस पर भी बोला जाता है जो अक़्ल व तदबीर और दीन में कमज़ोर और ज़ईफ़ हो, अगरचेह वह जवान हो और यहाँ यही मुराद है। क्यूँकि ख़ुलफ़ा बनू उमय्या में कोई ऐसा न था जो उम्र के लिहाज़ से ना बालिग़ होता। (शरह बुख़ारी, फ़तहुल बारी, जि.13, स.7)

यज़ीद नापाक के हामियों से सवाल

कुरैश के वह चन्द लड़के जिन्होंने उम्मत के इत्तिफ़ाक़ व इत्तिहाद का शीराज़ा बिखेर दिया और उम्मत की हलाकत व बरबादी का सबब बने वह अवारा लड़के कौन थे ? (जिनकी हुकूमत थी) अगर मालूम नहीं है तो यज़ीद की तरफ़दारी से तौबह कर लो और ग़ैब की ख़बर बताने वाले रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का फ़रमान मुलाहज़ा हो।

हज़रत अबू ओबेदा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया:

لَايَزَالُ اَمْرُ اُمَّتِىْ قَآئِمًا بِالْقِسْطِ حَتّٰى يَكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ يَّثْلُمُهٗ
رَجُلٌ مِّنْ بَنِىْ اُمَيَّةَ يُقَالُ لَهٗ يَزِيْدُ

मेरी उम्मत का अम्र (हुकूमत) अद्ल के साथ क़ायम रहेगा यहाँ तक कि पहला शख़्स जो उसे तबाह करेगा वह बनी उमय्या में से होगा जिसको यज़ीद कहा जाएगा (यानी उसका नाम यज़ीद होगा)

(अल बिदाया वन्निहाया, जि.8, स.231, अस्सवाएकुल मुहर्रिक़ह, स. 219)

हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से सुना

يَقُوْلُ مَنْ يُّبَدِّلُ سُنَّتِيْ رَجُلٌ مِّنْ بَنِيْ اُمَيَّةَ يُقَالُ يَزِيْدُ

फ़रमाते हैं कि पहला वह शख़्स जो मेरी सुन्नत को बदलेगा वह बनी उमय्या में से होगा जिसको यज़ीद कहा जाएगा (यानी उसका नाम यज़ीद होगा) (अस्सवाएकुल मुहर्रिक़ह, स. 219)

मशहूर मुहद्दिस हज़रत हाफ़िज़ इब्ने हजर अस्क़लानी इब्ने अबी शैबह की रिवायत नक़्ल फ़रमाते हैं –

कि मशहूर सहाबी हज़रत अबू हूरैरह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बाज़ार में चलते हुए (यानी अल्लाह तआला की बारगाह में यह) अर्ज़ किया करते थे कि–

اَللّٰهُمَّ لَا تُدْرِكْنِيْ سَنَةَ سِتِّيْنَ وَلَا اَمَارَةَ الصِّبْيَانِ

ऐ अल्लाह मुझे साठ (हिजरी) का साल और (आवारा) लड़कों की इमारत व हुकूमत न दे (यानी उससे पहले मुझे मौत दे दे) (फ़तहुल बारी, जि.13, स.8)

अल्लामा इब्ने हजर मक्की रज़ियल्लाहो तआला अन्हो तहरीर फ़रमाते हैं कि सन् साठ हिजरी में आवारा लड़कों की हुकूमत से पनाह मांगने का हुक्म रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने दिया था और हज़रत अबू हूरैरह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो को मालूम था इसी लिये वह दुआ किया करते थे कि

या अल्लाह ! मैं सन् साठ हिजरी की इब्तिदा और (आवारा) लड़कों की हुकूमत से तेरी पनाह मांगता हूँ।

अल्लाह तआला ने उनकी दुआ कुबूल फ़रमाई और उनको सन् उनसठ हिजरी में मौत दे दी और सन् साठ हिजरी में अमीर मुआविया का विसाल हुआ और यज़ीद की हुकूमत हुई और हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो जानते थे कि सन् साठ हिजरी में यज़ीद की हुकूमत होगी और यज़ीद के ना पसन्दीदा हालात को सादिक़ो मस्दूक़ सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के बताने से हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो जानते थे। इसी वजह से उन्होंने इस साल से अल्लाह की पनाह तलब की (अस्सवाएकुल महुर्रिक़ह, स. 219)

हाफ़िज़ इब्ने हजर अस्क़लानी फ़रमाते हैं:

हदीस से ज़ाहिर है कि उन लड़कों में पहला लड़का साठ हिजरी में होगा। चुनाँचे वही हुआ क्यूँकि यज़ीद बिन मुआविया साठ हिजरी में ही ख़लीफ़ा बना और चौसठ हिजरी तक बाक़ी रहा फिर मर गया। (फ़तहुल बारी, जि.13, स.8)

यही इमाम दूसरी जगह फ़रमाते हैं कि उन (आवारा) लड़कों में पहला यज़ीद है क्यूँकि यज़ीद (अपनी हुकूमत में) अकसर हालात में बुज़ुर्गों की बड़े बड़े शहरों की हुकूमत से हटा कर उनकी जगह अपनी रिश्ते दारों में से नौ उम्र लड़कों को (ओहदों) पर मुक़र्रर करता था। (फ़तहुल बारी, जि. 13, स.8)

अल्लामा बदरुद्दीन ऐनी और अल्लामा किरमानी ने भी उमदतुल क़ारी शरह बुख़ारी सफ़ा 180) व हाशिया बुख़ारी शरीफ़ में इसी तरह नक़्ल किया है उन (आवारा) लड़कों में से पहला यज़ीद है।

और इमाम अल्लामा अली क़ारी ने मिरक़ात और शरह शिफ़ा, जि. 1 स. 694) में इसी तरह फ़रमाया है कि हदीस शरीफ़ में जो (आवारा) लड़कों की हुकूमत फ़रमाया गया है कि उससे

मुराद यज़ीद बिन मुआविया है जिसने हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो को क़त्ल कराया और मदीना मुनव्वरा की हुरमत को पामाल किया और अपने लश्कर के वास्ते मदीना मुनव्वरा की पाक बाज़ औरतों के साथ ज़िना, तीन दिन के लिये जाइज़ कर दिया।

आशिक़े रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मुहक़्क़िक़ हज़रत शाह अब्दुल हक़ मुहद्दिसे दहलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं कि–

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो उन लड़कों को उनके नामों और उनकी शक्लो सूरत को पहचानते थे मगर डर और फ़साद की वजह से उनका नाम ज़ाहिर नहीं करते थे और मुराद यज़ीद बिन मुआविया और इब्ने ज़ियाद और दूसरे नौजवान हैं।

और फिर एक जगह फ़रमाते हैं कि क़बीला सक़ीफ़ में ज़ालिम हज्जाज बिन यूसुफ़ हुआ जिसने एक लाख बीस हज़ार मुसलमानों को क़ैद करके क़त्ल किया और बनी हुनेफ़ा में मुसेलमा कज़्ज़ाब हुआ जिसने नुबुव्वत का झूठा दावा किया और बनी उमय्या में यज़ीद और इब्ने ज़ियाद जैसे ज़ालिम हुए जिन्होंने नवासए रसूल हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो को शहीद किया और इब्ने ज़ियाद ने जो कुछ भी किया यज़ीद के हुक्म और उसकी रज़ा से किया।

(अशअतुल लमआत जि. 2 स. 623)

ग़ौसुल अग़वास, फ़रदुल अफ़राद, क़ुतबुल अक़ताब शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी सुम्मा बग़दादी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो जिस बुज़ुर्ग इमाम के मुक़ल्लिद हैं वह हज़रत इमाम अहमद बिन हम्बल रज़ियल्लाहो तआला अन्हो हैं और हज़रत इमाम अहमद बिन हम्बल रज़ियल्लाहो तआला अन्हो यज़ीद नापाक को काफ़िर कहते हैं और उस पर लानत भेजना जाइज़ समझते हैं चुनाँचे

आपके साहेबज़ादे हज़रत सालेह ने यज़ीद नापाक से दोस्ती रखने या उस पर लानत करने के बारे में पूछा तो इमाम अहमद बिन हम्बल रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फ़रमाया :

يَا بُنَيَّ وَهَلْ يَتَوَلَّىٰ يَزِيْدَ اَحَدٌ يُّوْمِنُ بِاللّٰهِ وَلِمَ لَا اَلْعَنَ

ऐ मेरे बेटे ! कोई शख़्स अल्लाह तआला पर ईमान रखने वाला ऐसा होगा जो यज़ीद से दोस्ती रखे और मैं उस पर क्यूँ न लानत करूँ। (अस्सवाएकुल मुहर्रिक़ह, स. 220)

और आगे वजह भी लिखी है जिसका जी चाहे किताब का मुताला कर ले।

ऐ ईमान वालो ! मेरे पीर, पीराने पीर हुज़ुर ग़ौसुल आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के इमाम हज़रत इमाम अहमद बिन हम्बल रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के क़ौल से ज़ाहिर हो गया कि कोई मोमिन यज़ीद से दोस्ती नहीं रखेगा बल्कि उस ख़बीस, पलीद यज़ीद नापाक पर लानत भेजेगा।

हज़रत अल्लामा अली क़ारी रहमतुल्लाहे तआला अलैहि इमाम इब्ने होमाम का क़ौल नक़्ल फ़रमाते हैं कि इमाम इब्ने होमाम ने फ़रमाया बाज़ ने यज़ीद नापाक को काफ़िर कहा इस लिये कि उससे ऐसी बातें ज़ाहिर हुईं जो यज़ीद के कुफ़्र पर दलालत करती हैं, जैसे शराब को हलाल करना और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो और आपके साथियों के क़त्ल के बाद यह कहना कि मैंने (उनसे) बदला लिया है अपने बुज़ुर्गों और सरदारों के क़त्ल का जो उन्होंने (मैदान) बद्र में किये थे या ऐसी ही और बातें शायद इसी वजह से इमाम बिन हम्बल रज़ियल्लाहो तआला अन्हो यज़ीद को काफ़िर कहते हैं कि उनके नज़दीक उसकी इस बात की नक़्ल साबित होगी। (शरह फ़िक़ह अकबर, स. 88)

शाह वलीउल्लाह मुहद्दिसे दहलवी रहमतुल्लाहे तआला

अलैहि लिखते हैं कि-

यज़ीद नापाक गुमराह और गुमराह गर था और गुमराही की तरफ़ बुलाने वाला शाम में यज़ीद था और इराक़ में मुख़्तार था।

(हुज्जतुल्लाहिल बालेगा जि. 2, स. 507)

ऐ ईमान वालो ! हमारे प्यारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के इरशादात और सहाबा-ए-किराम रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन के अक़वाल और अइम्मए किराम व मुहद्दिसीने इज़ाम के फ़रमूदात जो किताबों में मौजूद हैं उससे साबित हो गया कि यज़ीद नापाक, सुन्नत को बदलने वाला बे अक़्ल, झूटा, ज़ालिम था। मज़ीद इत्मिनान व यक़ीन के लिये हवाला मुलाहज़ा फ़रमाएं।

हज़रत इमाम बुख़ारी ने सही बुख़ारी जि. 2 स. 1046) और हज़रत इमाम हाफ़िज़ इब्ने कसीर रहमतुल्लाहे अलैहि ने अलबिदाया वन्निहाया जि. 8 स. 231) पर और हज़रत हाफ़िज़ इब्ने हजर अस्क़लानी रहमतुल्लाहे तआला अलैहि ने फ़तहुल बारी जि. 13 स. 7) पर और अल्लामा इमाम इब्ने हजर हेतमी मक्की ने अस्सवाएकुल मुहर्रिक़ह स. 219 पर और अल्लामा अली मुत्तक़ी ने कन्जुल अम्माल जि. 6 स. 45 पर और अल्लामा बदरुद्दीन ऐनी और अल्लामा किरमानी अलैहिमर्रहमा ने उमदतुल क़ारी शरह बुखारी स. 80 पर, हज़रत इमाम अल्लामा अली कारी रहमतुल्लाह अलैहि मिरक़ात और शरह शिफ़ा शरीफ़ जि. 1 स. 694 और शरह फ़िकह अकबर स. 88 पर, अल्लामा अली इब्ने अहमद रहमतुल्लाह अलैहि सिराजे मुनीर शरह जामेअ् सग़ीर, जि. 3 स. 296 पर- अल्लामा सअ्दुद्दीन तफ़ता ज़ानी रहमतुल्लाहे तआला अलैहि शरह अक़ाइद, स. 102 पर - और अल्लामा शैख़ मो. बिन अली अस्सब्बान ने इसआफ़ुर्राग़ेबीन स. 210 पर - इमाम अहमद

क़स्तलानी शारेह सहीह बुख़ारी रहमतुल्लाहे तआला अलैहि ने अस्सावी जि. 5, स. 101) पर और अल्लामा इमाम जलालुद्दीन सोयूती रहमतुल्लाहे तआला अलैहि तारीख़ुल ख़लफ़ा, स. 80 पर - और साहिबे रुहानियत बुज़रुग हज़रत मौलाना रूम रहमतुल्लाहे तआला अलैहि मसनवी शरीफ़ में और शाफ़ईय्यों के बुजुर्ग इमाम व फ़कीह हज़रत अल्लामा अलकया अलहरासी रहमतुल्लाहे तआला अलैहि हयातुल हैवान जि. 2 स. 225 पर - आशिक़े मदीना हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी रहमतुल्लाहे तआला अलैहि तकमीलुल ईमान स. 97 - और अशअतुल लमआत जि. 2 स. 623 पर और इमामे रब्बानी हज़रत मुजद्दिद अलफ़े सानी रहमतुल्लाहे तआला अलैहि मकतूबात शरीफ़ स. 54 पर और मौलाना अब्दुल हई लखनवी मजमूउल फ़तावा जि. 3 स. 8 पर - और हज़रत मौलाना शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिस दहलवी सिर्रुश्शहादतैन स. 12 - और फ़तावा अज़ीज़िया जि. 1 स. 252 पर - और हज़रत बू अली शाह क़लन्दर रहमतुल्लाहे तआला अलैहि अपनी लिखी हुई मसनवी स. 6 पर और ख़ातेमुल मुहक़्क़ेक़ीन मुफ़्तिये बग़दाद अल्लामा अबुल फ़ज़्ल शहाबुद्दीन आलूसी बग़दादी रहमतुल्लाहे तआला अलैहि तफ़सीर रूहुल मआनी जि. 26. स. 66 पर - और हज़रत अल्लामा क़ाज़ी सनाउल्लाह पानी पती रहमतुल्लाहे तआला अलैहि तफ़सीरे मज़हरी, जि. 5 स. 21 पर- और अल्लामा इमाम यूसुफ़ बिन इस्माईल नबहानी अशरफ़ुल मोअ्अय्यद स. 49 पर और अल्लामा इब्ने ख़ुलदून मुक़द्दमा इब्ने ख़ुलदून स. 180 पर लिखा कि यज़ीद नापाक, फ़ासिक़ो फ़ाजिर और शराबी व ज़ालिम था।

ऐ ईमान वाले भाईयो ! बुज़ुर्गों के अक़वाल व बयानात से अच्छी तरह वाज़ेह और साबित हो गया कि यज़ीद कैसा था और उसने कैसे कैसे ज़ुल्म व गुनाह किये हैं उसके बाद

भी कोई बदअक़ीदा शख़्स यज़ीद नापाक को अमीरुल मोमिनीन कहता है और उसकी तारीफ़ व तौसीफ़ करता है तो वह ज़ालिम और झूटा है और उसका हश्र भी यज़ीद नापाक के साथ ही होगा इन्शाअल्लाहो तआला।

अब आख़िर में हम इमामे अहले सुन्नत आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की तहरीर पेश करते हैं वह लिखते हैं कि यज़ीद पलीद ब-इजमाए अहले सुन्नत फ़ासिक़ो फ़ाजिर और गुनाहे कबीरा का मुरतकिब था, इस पर अहले सुन्नत का इत्तिफ़ाक़ है। सिर्फ़ उसकी तकफ़ीर व लअन में इख़्तिलाफ़ है। फ़रमाया : इमाम अहमद बिन हम्बल रज़ियल्लाहो तआला अन्हो और उनके मुत्तबेईन व मुवाफ़िक़ीन उसे काफ़िर कहते हैं। शक नहीं कि यज़ीद ने वालिये मुल्क होकर ज़मीन में फ़साद फैलाया, हरमैन तय्येबैन और ख़ुद काबा मुअज़्ज़मा और रोज़ए तय्येबा की सख़्त बे हुरमतियाँ कीं, मस्जिदे करीम में घोड़े बाँधे उनकी लीद और पैशाब मिम्बरे अतहर पर पड़े, तीन दिन तक मस्जिदे नबवी शरीफ़ में अज़ान व नमाज़ नहीं होने दीं, मक्का व मदीना व हिजाज़ में हज़ारों सहाबा व ताबईन को बे गुनाह शहीद किया, काबा मुअज़्ज़मा पर पत्थर बरसाए और ग़िलाफ़े काबा को फाड़ा और जलाया, मदीना मुनव्वरा की पाक दामन पारसाएंयानी औरतों को तीन दिन और तीन रातें अपने ख़बीस लश्कर पर हलाल कर दिया, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के जिगर के टुकड़े हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो को तीन दिन भूका प्यासा रखकर मय साथियों के तेग़े ज़ुल्म से ज़िबह किया और प्यारे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के गोद के पाले हुए तने नाज़नीन पर शहादत के बाद घोड़े दौड़ाए कि तमाम हड्डियाँ चूर चूर हो गईं, हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो

तआला अन्हो का सरे अनवर जो महबूबे ख़ुदा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो तआला अलैहि व अलिही वसल्लम का बोसा गाह था, काट कर नेज़े पर चढ़ाया और जगह जगह फिराया, हरमे मोहतरम यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बेटियों को क़ैद किया गया और बे अदबी के साथ उस ख़बीस, यज़ीद नापाक के दरबार में लाया गया। इससे बढ़कर क़तअ् रहम और ज़मीन में फ़साद क्या होगा, मलऊन है वह जो इन मलऊन हरकात को फ़िस्को फ़ुजूर न जाने। क़ुरआने करीम में सराहतन उस पर لعنهم الله अल्लाह की लानत फ़रमाया।

लिहाज़ा इमाम अहमद बिन हम्बल और उनके मुवाफ़िक़ीन उस पर लानत फ़रमाते हैं और हमारे इमामे आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो लअन व तकफ़ीर से एहतियातन सुकूत करते हैं कि उससे फ़िस्को फ़ुजूर मुतवातिर हैं कुफ़्र मुतवातिर नहीं मगर उसके फ़िस्को फ़ुजूर से इनकार करना और इमाम मज़लूम पर इलज़ाम रखना ज़रूरियाते मज़हबे अहले सुन्नत के ख़िलाफ़ है और गुमराही व बदमज़हबी साफ़ है। (फ़तावा रज़विया शरीफ़ जि. 6 स. 107-8)

ऐ ईमान वालो ! यज़ीद नापाक के मुतअल्लिक़ मुख़ालिफ़े अहले सुन्नत के गिरोह के उलमा के अक़वाल व बयानात भी मुलाहज़ा फ़रमा लीजिये।

देवबन्दी और तबलीग़ी जमाअत के बड़े मौलाना मौलवी अशरफ़ अली थानवी लिखते हैं कि यज़ीद फ़ासिक़ था और फ़ासिक़ की विलायत मुख़तलफ़ फ़ीह है। (इमदादुल फ़तावा जि. 5 स. 51)

और देवबन्दियों के पीर व मुर्शिद मौलवी रशीद अहमद गंगोही तहरीर करते हैं -

कि बाज़ अइम्मा ने जो यज़ीद के निस्बत कुफ़्र से कफ़े लिसान किया है वह अहतियात है क्योंकि क़त्ले हुसैन को हलाल जानना कुफ़्र है मगर यह अम्र कि यज़ीद क़त्ल को हलाल जानता था मुहक़्क़क़ नहीं लिहाज़ा काफ़िर कहने से एहतियात

रखे मगर (यज़ीद) फ़ासिक़ बेशक था।

(फ़तावा रशीदिया, जि.1,स.7)

देवबन्दी जमाअत के मुस्तनद मौलाना मौलवी क़ासिम नानोतवी बानी दारुल उलूम देवबन्द लिखते हैं:

बाज़ के नज़दीक यज़ीद काफ़िर हो गया और बाज़ के नज़दीक उसका कुफ़्र मुतहक़्क़क़ न हुआ बल्कि उसका पहला इस्लाम फ़िस्क़ के साथ मख़लूत हो गया।

अगर इमाम हुसैन ने उसको काफ़िर समझा तो उस पर ख़ुरूज करने में क्या ग़लती की ? इमाम अहमद रहमतुल्लाह अलैहि को यही पसन्द आई (मकतूबाते शैख़ुल इस्लाम, जि.1,स. 258)

देवबन्दी जमाअत के एक बड़े मौलवी साहब, मौलवी मुहम्मद तैय्यब, साबिक़ मोहतमिम दारुल उलूम देवबन्द लिखते हैं:

बहरहाल यज़ीद के फ़िस्क़ो फुजूर पर जब कि सहाबा-ए-किराम सबके सब ही मुत्तफ़िक़ हैं ख़्वाह मुबाएईन हों या मुख़ालेफ़ीन। फिर अइम्मए मुजतहेदीन भी मुत्तफ़ीक़ हैं और उनके बाद के उलमाए रासेख़ीन, मुहद्देसीन फ़ुक़हा मिस्ल अल्लामा क़स्तलानी, अल्लामा बदरुद्दीन ऐनी, अल्लामा हतीमी, अल्लामा इब्ने जौज़ी, अल्लामा सअ्दुद्दीन तफ़ताज़ानी, मुहक़्क़िक़ इब्ने होमाम, हाफ़िज़ इब्ने कसीर, अल्लामा अलक़िया अल हरासी जैसे मुहक़्क़ेक़ीन यज़ीद के फ़िस्क़ पर उलमाए सलफ़ का इत्तिफ़ाक़ नक़्ल कर रहे हैं और ख़ुद भी इसके क़ाइल हैं तो इससे ज़्यादा यज़ीद के फ़िस्क़ (यानी गन्दा व नापाक) के मुत्तफ़िक़ होने की शहादत और क्या हो सकती है ? (शहीदे करबला और यज़ीद, स. 159)

ग़ैर मुक़ल्लिदों के इमाम यानी अहले हदीस कहलाने वालों के पेशवा नवाब सिद्दीक़ हसन ख़ाँ भोपाली कहते हैं।

मक़रीज़ी ने ख़त में ज़िक्र किया है कि जब हुसैन मारे गए

आसमान रोया और ज़ोहरी ने कहा कि हम को यह बात पहुँची है कि जिस दिन क़त्ले हुसैन हुआ कोई पत्थर बैतुल मुक़द्दस में का नहीं उठाया गया लेकिन उसके नीचे ताज़ा सुर्ख़ ख़ून निकला और दूनिया में तीन दिन तक तारीकी रही और लिखते हैं कि ज़ोहरी ने कहा कि क़ातिलाने हुसैन में से कोई शख़्स नहीं बचा लेकिन आख़िरत से पहले दुनिया ही में सज़ा पाया तो मारा गया या रू स्याह हो गया।

(तशरीफ़ुल बशर, व ज़िक्रिल अइम्मतुल असना अशर, स.29)

जमाअते इस्लामी के बानी व अमीर अबुल अअ्ला मोदूदी लिखते हैं कि -

यज़ीद के दौर में तीन ऐसे वाक़िआत हुए जिन्होंने पूरी दुनिया-ए-इस्लाम को लर्ज़ा बरन्दाम कर दिया।

पहला वाक़िआ सय्यदना हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की शहादत का वाक़िआ है। मोदूदी साहब हाफ़िज़ इब्ने कसीर के हवाले से लिखते हैं कि

क़त्ले हुसैन पर यज़ीद ने इब्ने ज़ियाद को न कोई सज़ा दी न उसे माज़ूल किया न उसे मलामत ही का कोई ख़त लिखा। यज़ीद में अगर इन्सानी शराफ़त की भी कोई रमक़ होती तो वह सोचता कि फ़तह मक्का के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उसके पूरे ख़ानदान पर क्या एहसान किया था और उसकी हुकूमत ने उनके नवासे के साथ क्या सुलूक किया (इसी तरह जमाअते इस्लामी के अमीर मोदूदी साहब ने क़दरे तफ़सील के साथ यज़ीद के ज़ुलमो सितम को बयान किया है और यज़ीद को ज़ालिम और ग़द्दार साबित किया है। (इमाम पाक और यज़ीद पलीद, स. 115)

आज कल कुछ देवबन्दी और ग़ैर मुक़ल्लेदीन यज़ीद नापाक को नेक व सालेह और जन्नती कहते और लिखते हैं जब कि उन के बुज़ुर्गों ने भी यज़ीद को फ़ासिक़ व फ़ाजिर और ज़ालिम लिखा है जैसा कि ऊपर गुज़रा।

हदीसे कुसतुन तुनिया और यज़ीद नापाक

यज़ीद नापाक की हिमायत व वफ़ादारी में जो लोग बुख़ारी शरीफ़ की हदीस से यज़ीद पलीद का जन्नती होना साबित करना चाहते हैं महज़ बातिल और झूट है। अल अमान वलहफ़ीज़

हदीस शरीफ़

اَوَّلُ جَيْشٍ مِّنْ اُمَّتِىْ يَغْزُوْنَ مَدِيْنَةَ قَيْصَرَ مَغْفُوْرٌ لَّهُمْ

मेरी उम्मत का पहला लश्कर जो क़ैसर के शहर में जंग करेगा वह बख़्शा हुआ है। (बुख़ारी शरीफ़, जि.1, स.410)

सहीह बुख़ारी की इस हदीस में मुतलक़न नहीं फ़रमाया गया कि जितने लोग भी क़ैसर के शहर में ग़ज़वा करेंगे उन सब के लिये बख़्शिश है, बल्कि हमारे प्यारे रसूल ग़ैब दांआक़ा सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के इल्म में था कि मेरे अहले बेत का दुश्मन और मेरे बेटे इमाम हुसैन का क़ातिल यज़ीद नापाक। पहला लश्कर जो क़ैसर के शहर कुसतुनतुनिया पर हमला करेगा उस पहले लश्कर में शामिल नहीं होगा इस लिये आक़ा सल्लल्लाहो अलैहि व आलिही वसल्लम ने मग़फ़िरत व बख़्शिश का इनआम उन के लिये रखा जो اَوَّلُ جَيْشٍ مِّنْ اُمَّتِىْ फ़रमाकर पहले लश्कर में जो लोग शरीक होंगे उनके लिये ख़ास फ़रमा दिया और उस पहले लश्कर में यज़ीद शरीक ही नहीं था।

मुलाहज़ा फ़रमाइये अल्लामा इब्ने असीर फ़रमाते हैं:

और इसी साल सन् उनचास हिजुरी में और कहा गया है कि सन् पचास हिजरी में हज़रत मुआविया ने एक लश्करे जर्रार बलादे रूम की तरफ़ भेजा और उस पर हज़रत सुफ़ियान बिन औफ़ को अमीर बनाया और अपने बेटे यज़ीद को उनके साथ

ग़ज़वा में शरीक होने का हुक्म दिया तो यज़ीद बेठा रहा और हीले बहाने शुरू किये तो अमीर मुआविया उसके भेजने से रुक गए।(इब्ने असीर, जि.3,स.189)

अल्लामा इब्ने असीर की इस रिवायत से साफ़ तौर पर ज़ाहिर और साबित हो गया कि हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने जो पहला लश्कर क़ैसरे रूम पर भेजा उस लश्कर में यज़ीद शामिल ही नहीं था।

इमामुल मुहद्दिसीन अल्लामा इमाम बदरुद्दीन ऐनी शारेह सहीह बुख़ारी रहमतुल्लाहे तआला अलैहि तहरीर फ़रमाते हैं कि अगर यह बात मान भी ली जाए कि यज़ीद ने सबसे पहले क़ैसर के शहर कुस्तुनतुनिया में जंग की है तो मैं कहता हूंकि वह कौन सी मनक़बत है जो यज़ीद के लिये साबित हो गई जब कि उस का हाल ख़ूब मशूहर है। अगर तुम यह कहो कि हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उस लश्कर के हक़ में मग़फ़ूरुल लहुम फ़रमाया तो मैं कहता हूँ कि इस उमूम में यज़ीद के दाख़िल होने से यह लाज़िम नहीं आता कि वह किसी दूसरी दलील से उससे ख़ारिज भी न हो सके क्योंकि इस में तो अहले इल्म का कोई इख़्तिलाफ़ ही नहीं कि हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के क़ौल मग़फ़ूरुल लहुम में वही दाख़िल हैं जो मग़फ़िरत के अहल हैं। यहाँ तक कि अगर उन ग़ज़वा करने वालों में से कोई मुरतद हो जाता तो वह यक़ीनन इस बशारत के उमूम में दाख़िल न रहता।

पस यह साफ़ तौर से साबित हो जाता है कि मग़फ़िरत से मुराद यह है कि जिसके वास्ते मग़फ़िरत की शर्त पाई जाए उसके वास्ते मग़फ़िरत है (उमदतुल क़ारी शरह बुख़ारी, जि. 6, स. 649)

क़रीब ऐसा ही अल्लामा इमाम क़स्तलानी शारेह बुख़ारी रहमतुल्लहे तआला लैहि ने अस्सावी शरह बुख़ारी जि. 5, स. 101 पर और अल्लामा हाफ़िज़ इब्ने हजर अस्क़लानी

रहमतुल्लाहे तआला अलैहि फ़तहुल बारी शरह बुख़ारी जि.6,स. 65 पर और अल्लामा शैख़ अली इब्न अश्शैख़ अहमद रहमतुल्लहो तआला अलैहि ने सिराजे मुनीर शरह जामेअ् सग़ीर जि.2स.79 पर लिखते हैं : साबित हो गया कि यज़ीद हरगिज़ हरगिज़ हदीसे बुख़ारी में जो बशारत दी गई उसका मुस्तहिक़ नहीं है।

ऐ ईमान वालो ! बेशक हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का हर क़ौल और हर हदीस हक़ और सच है मगर उस में शराइत का पाया जाना ज़रूरी होता है जैसे आक़ा सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : दुआ मांगो अल्लाह तआला कुबूल फरमाएगा मगर शर्त यह है कि झूट और हराम रोज़ी से बचोगे तो दुआ कुबूल होगी। सरकार सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया नमाज़ पढ़ो मगर इस शर्त के साथ कामिल तहारत और वुज़ू कर लो वर्ना नमाज़ न होगी। इसी तरह हज व रोज़ा और ज़कात वग़ैरह तमाम आमाल के लिये शराइत हैं कि अगर ऐसा करोगे तो मक़बूल बनोगे।

जैसे आक़ा सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया-

कि जिस शख़्स ने कलिमा لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه पढ़ा वह जन्नती हो गया। बैशक मेरे आक़ा सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का फ़रमान सच और बहुत ही सच है लेकिन यज़ीद नापाक को जन्नती कहने वाले यज़ीदी हज़रातसे पूछना चाहिये कि एक शख़्स है जो तक़दीर को फ़रिश्तों, अम्बियाए साबेक़ीन को, मरने के बाद ज़िन्दा होने को, क़ब्र के सवालो जवाब को, क़ियामत के दिन हिसाबो किताब को, जन्नत व दोज़ख़ को और जो उमूरे ज़रूरियाते दीन है उन को नहीं मानता है या इन में से किसी एक अमरे ज़रूरी को नहीं मानता है और न ही उस पर

ईमान रखता है और उस शख़्स का हाल यह है कि सुबह से शाम तक बेशुमार मंरतबा कलमा शरीफ पढता रहता है तो क्या वह शख़्स कलमा पढने की बुनिया पर जन्नती है ? ऐ यज़ीदी गिरोह के लोगो ! हिम्मत है तो कह दो कि वह शख़्स जन्नती है इस लिये कि वह कलमा पढ़ता है चाहे वह ज़रूरियाते दीन का इनकार करता हो, मरजाओगे मगर उस शख़्स को जन्नती साबित नहीं कर सकते हो।

इसी तरह यज़ीद नापाक का हाल है। जैसा कि अइम्मए किराम, मुहद्दिसीने इज़ाम और बुज़ुर्गों के अक़वाल व बयानात से साफ़ तौर पर ज़ाहिर और साबित हो गया कि यज़ीद नापाक कुसतुनतुनिया वाली हदीस शरीफ़ की बशारत से महरूम है और अपने बूरे किरदार और गन्दे अफ़आल के सबब यज़ीद पलीद, फ़ासिक़ व फ़ाजिर, ज़ालिम व क़ातिल और मुस्तहिके अज़ाबे नार है।

अहले बैते पाक से गुस्ताख़ियाँ बे बाकियाँ ?

لَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ

दुश्मनाने अहले बैत

बे अदब गुस्ताख़ फ़िरक़ा को सुना दे ऐ हसन
यूँ बयां करते हैं सुन्नी दास्ताने अहले बैत
इन्सान को बेदार तो हो लेने दो
हर क़ौम पुकारेगी हमारे हैं हुसैन

सहाबीए रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का ना ख़लफ़ बेटा यज़ीद पलीद है।

ऐ ईमान वालो ! यज़ीद नापाक की नापाकी का छींटा उस के बाप होने के सबब हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहो

तआला अन्हो की तरफ़ मत फेंको। यही हमारा मज़हब व मसलक है जो हमारे बुजुर्गों के अक़वाल व अफ़आल से जाहिर व साबित है।

हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहो अन्हो

हमारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के सहाबी और कातिबे वही हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहो तआला अन्हो हैं और सहाबी वह ख़ूश नसीब मुसलमान है जिस ने ईमान की हालत में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को देखा और ईमान पर उस का खातमा हुआ और सहाबी का वह दर्जा है कि कोई शख़्स कितना ही बड़ा वली और कुतुब क्यों न हो उन के अदना दर्जा के बराबर नहीं हो सकता।

हदीस बुख़ारी व मुस्लिम में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया:

لَا تَسُبُّوْا اَصْحَابِیْ فَلَوْ اَنَّ اَحَدَ کُمْ اَنْفَقَ مِثْلَ اُحُدٍ
ذَهَبًامَّا بَلَغَ مُدَّاَحَدِ هِمْ وَلَا نَصِیْفَهٗ

तुम मेरे सहाबी को गाली न दो और न बुरा कहो। इस लियेकि तुम में से अगर कोई शख़्स उहद हाड़ के बराबर सोना ख़र्च करे तो वह शख़्स उन के किलो और आधा किलो गेहूँ और जो ख़र्च करने के बराबर नहीं हो सकता। (मिश्कात शरीफ़ स. 553)

और इसी तरह की रिवायत है कि जो शख़्स मेरे सहाबी को गाली दे और बुरा कहे उस पर अल्लाह तआला की लानत और जब उन का ज़िक्र किया जाए तो उन पर नुक्ता चीनी न करो।
(मिश्कात शरीफ स. 554)

आशिक़े अहले बैत हज़रत अल्लामा इमाम यूसुफ़ बिन इस्माईल निबहानी रहमतुल्लाहे अलैहि तहरीर फ़रमाते हैं कि–

हज़रत अल्लामा सअ्दुद्दीन तफ़ताज़ानी रहमतुल्लाहे तआला

अलैहि फ़रमाते हैं कि अहले हक़ का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि तमाम उमूर में हज़रत मौला अली शैरे ख़ुदा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो हक़ पर थे और फ़रमाते हैं

وَالتَّحْقِیْقُ اَنَّهُمْ کُلُّهُمْ عَدُوْلٌ

यानी तहक़ीक़ यह है कि तमाम सहाबा आदिल हैं और सारी जंगें और इख़्तिलाफ़ात तावील पर मबनी हैं उन के सबब कोई भी अदालत से ख़ारिज नहीं इस लिये कि वह सब मुजतहिद हैं।
(बरकाते आले रसूल स. 282)

और इसी तरह अल्लामा मनावी रहमतुल्लाहे तआला लैहि और अल्लामा इब्ने हजर मक्की रहमतुल्लाहे तआला अलैहि और अल्लामा लिक़ानी रहमतुल्लाहे तआला अलैहि और अल्लामा इब्ने सुबकी रहमतुल्लाहे अलैहि और अल्लामा क़ाज़ी अयाज़ रहमतुल्लाहे अलैहि ने तहरीर फ़रमाया है और अल्लामा जलालुद्दीन स्यूती रहमतुल्लाहे अलैहि ने अपने रिसाले इलकामु लहजर में इस बात पर इत्तिफ़ाक़ नक़्ल किया है कि किसी भी सहाबी को गाली देने वाला फ़ासिक़ है अगर उसे वह हलाल न जाने और अगर वह हलाल जाने तो काफ़िर है।
(अश्शारफ़ुल मुअय्यिद स. 104)

ऐ ईमान वालो! हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहो तआला अन्हो लारैब यक़ीनन सहाबी हैं अइम्मए किराम व मुहद्दिसीने इज़ाम और बुजुर्गों के अक़वाल व बयानात से साफ़ तौर पर ज़ाहिर व साबित है कि तमाम सहाबा–ए–किराम को या किसी एक सहाबी को चाहे हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहो तआला अन्हो को गाली देने वाला, उन को बुरा कहने वाला अहले सुन्नत से नहीं हो सकता यक़ीनन ऐसा शख़्स राफ़ज़ी और जहन्नमी ही हो सकता है।

दस मुहर्रम के मशहूर वाक़िआत

इस्लाम का पहला महीना मुहर्रम शरीफ़ है। इस माह में जंग व जिदाल हराम है और इस माह में आशूरा का दिन बहुत बुज़ुर्ग है

यानी दसवीं मुहर्रम का दिन।

दस मुहर्रम को यह वाक़िआत रूनुमा हुए

1) हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की तौबह कुबूल हुई।
2) हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम मछली के पेट से बाहर आए
3) हज़रत नूह अलैहिस्सलाम कश्ती से सलामती के साथ उतरे
4) हज़रत इब्राहीम खलीलुल्लाह अलहिस्सलाम पैदा हुए।
5) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पैदा हुए।
(फ़ैज़ुलक़दीर, शरह जामेअ् सग़ीर लिलमुनावी, जि.3, स.34)
6) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर आग गुलज़ार हुई।
7) हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम ने मरज़ (बीमारी) से शिफ़ा पाई।
8) हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम की बीनाई वापस आई।
9) हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम कुंए से निकले।
10) हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम को बादशाही मिली।
11) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पैदा हुए और उसी दिन जादूगरों पर ग़ालिब आए। (अजाएबुल मख़लूक़ात स. 44)
12) हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो शहीद हुए
13) क़ियामत इसी दिन आएगी।
14) पहली बारिश आसमानों से नाज़िल हुई
(ग़ुनयतुतालिबीन, जि. 2 स.53)

आशूरा के दिन नेक काम

ऐ ईमान वालो ! यौमे आशूरा यानी दस मुहर्रम एक बुज़ुर्ग दिन है। इस में नेक कामों के बड़े अजरो सवाब हैं कुछ नेक कामों को ज़िक्र किया जाता है। हमारे मुर्शिदे आज़म हुज़ूर ग़ौसे आज़म शैख अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो तहरीर फ़रमाते हैं।

(1) दस मुहर्रम शरीफ़ के दिन किसी यतीम के सर पर मुहब्बत से हाथ फेरना बड़ा अजरो सवाब है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा से रिवायत है कि हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया

مَنْ مَّسَحَ بِيَدِهٖ عَلٰى رَاْسِ يَتِيْمٍ يَوْمَ عَاشُوْرَاءَ رَفَعَ اللّٰهُ
تَعَالٰى لَهٗ بِكُلِّ شَعْرَةٍ عَلٰى رَاْسِهٖ دَرَجَةً فِى الْجَنَّةِ

जो शख़्स आशूरा के दिन किसी यतीम के सर पर हाथ फेरेगा तो अल्लाह तआला उस के लिये यतीम के सर के हर बाल के बदले एक दर्जा जन्नत में बुलन्द फ़रमाएगा।

(ग़ुनयतुत तालिबीन, जि.2, स.53)

ऐ ईमान वालो ! यतीम से मुहब्बत करना और उस को खिलाना पलाना बड़ा सवाब है। यतीम की दुआ से बला व मुसीबत दूर हो जाती है और रोज़ी बढ़ा दी जाती है।

(2) हमारे प्यारे पीर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो तहरीर फ़रमाते हैं कि महबूबे ख़ुदा प्यारे मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमाते हैं

مَنِ اغْتَسَلَ يَوْمَ عَاشُوْرَاءَ لَمْ يَمْرِضْ مَرَضًا اِلَّا مَرَضَ الْمَوْتِ

जो शख़्स आशूरा के दिन ग़ुस्ल करे तो किसी मरज़ में मुब्तला न होगा सिवाए मर्ज़ मौत के।

(ग़ुनयतुत तालिबीन, जि.2, स.53)

(3) दस मुहर्रम शरीफ़ के दिन गुनाहों और ख़ताओं से तौबह कसरत से करना चाहिये कि इस दिन तौबह जलदी कुबूल होती है। अल्लाह तआला हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से फ़रमाता है।

अपनी क़ौम को हुक्म दो कि वह दसवीं मुहर्रम को मेरी बारगाह में तौबह करें और जब दसवीं मुहर्रम का दिन हो तो मेरी तरफ़ रुजूअ् करें।

اَغْفِرْلَهُمْ मैं उन सब की मग़फ़िरत फ़रमाऊँगा। (फ़ैज़ुल क़दीर, शरह जामेअ् सग़ीर, जि. 3, स.34)

(4) दस मुहर्रम शरीफ़ के दिन आँखों में सुर्मा डालना,

आँखों की तमाम बीमारियों के लिये शिफ़ा है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा से रिवायत है कि हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : لَمْ تَرْمَدْ عَيْنُهُ اَبَدًا तो उस की आँख कभी भी न दुखेगी। (बेहक़ी)

मौज़ूआत अलकबीर में हज़रत मौला अली क़ारी रहमतुल्लाहे अलैहि फ़रमाते हैं। दस मुहर्रम के दिन आँखों में सुर्मा लगाना खुशी के इज़हार के लिये नहीं होना चाहिये क्योंकि दस मुहर्रम शरीफ़ की ख़ुशी मनाना ख़ारजियों का फ़ेल है बल्कि हदीस शरीफ़ पर अमल करने के लिये आखों में सुर्मा डालना चाहिये।

(5) दस मुहर्रम के दिन अपने अहलो अयाल के वास्ते घर में वसीअ् पैमाने पर खाने का इन्तिज़ाम करना चाहिये ताकि अल्लाह तआला दस महुर्रम की बरकत से पूरे साल वुसअत व बरकत अता फ़रमाए।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत है कि रसूले आज़म रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स आशूरा के दिन अपने अहलो अयाल पर नफ़्क़ा में वुसअत करे यानी ख़ूब ज़्यादा ख़र्च करेगा तो अल्लाह तआला उस पर पूरे साल वुसअत फ़रमाएगा। قَالَ سُفْيَانُ اِنَّا قَدْ جَرَّبْنَاهُ فَوَجَدْنَا كَذَالِكَ

हज़रत सुफ़ियान सोरी रहमतुल्लाहे तआला अलैहि ने फ़रमाया कि हम ने इस का तजरबा किया तो ऐसा ही पाया (यानी रोज़ी में ख़ूब बरकत पाया) (बेहक़ी, मिश्कात, स.170)

मेरे प्यारे पीर पीराने पीर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं कि हज़रत सुफ़ियान सोरी रहमतुल्लाहे तआला अलैहि ने फ़रमाया कि हम ने पचास साल इस का तजरबा किया तो वुसअत व बरकत ही देखी।

(गुनयतुत तालिबीन, जि.2,स.54)

(6) **ऐ ईमान वालो !** इसी तरह अल्लामा मनावी फ़ैज़ुल क़दीर जि,2,स.236) पर लिखते हैं कि हज़रत जाबिर सहाबी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फ़रमाया कि हम ने इस का तजरबा किया तो उस को सहीह पाया और हज़रत इब्ने ऐनिया रहमतुल्लाह तआला अलैहि ने फ़रमाया कि हम ने पचास साठ साल उस का तजुरबा किया तो रोज़ी में वुसअत व बरकत ही पाई। लिहाज़ा मुसलमानों को चाहिये कि दस मुहर्रम शरीफ़ को ख़ूब ज़्यादा खाना पकाना चाहिये और खिलाना चाहिये।

पीरों के पीर हमारे पीर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं कि आशूरा के दिन लोगों को पानी पिलाना बहुत बड़ा सवाब है (अब अगर कोई शख़्स दूध पिलाए तो उस को सवाब कितना ज़्यादा होगा)

हमारे प्यारे सरकार नबीये मुअज़्ज़म रसूले मुकर्रम सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

وَمَنْ سَقٰى شَرْبَةً مِّنْ مَّآءٍ يَوْمَ عَاشُوْرَاءَ فَكَاَنَّمَا لَمْ يَعْصِ اللّٰهَ طُرْفَةَ عَيْنٍ

जो आशूरा के दिन पानी पिलाए तो गोया उस ने थोड़ी देर के लिये अल्लाह तआला की ना फ़रमानी नहीं की (यानी उस ने अल्लाह तआला की ख़ुश्नोदी का काम किया)

(गुनयतुत तालिबीन, जि.2, स. 54)

दस मुहर्रम को रोज़ा रखना बड़ा सवाब है

हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने आशूरा के दिन ख़ूद भी रोज़ा रखा और अपने ग़ुलामों को भी रोज़ा रखने का हुक्म दिया।

صُوْمُوْا يَوْمَ عَاشُوْرَاءَ يَوْمَ كَانَتِ الْاَنْبِيَآءُ تَصُوْمُهُ

फ़रमाया ! आशूरा के दिन रोज़ा रखो। इस दिन अम्बियाए किराम रोज़ा रखते थे। (जामेअ् सग़ीर, जि.4, स.215)

इस हदीस शरीफ़ के तहत अल्लामा मनावी रहमतुल्लाहे तआला अलैहि फ़रमाते हैं कि आशूरा के दिन यानी दस मुहर्रम शरीफ़ की फ़ज़ीलत बहुत बड़ी है और उसकी हुरमत व बुज़ुर्गी क़दीम ज़माने से चली आ रही है। इब्ने रजब ने फ़रमाया कि दस मुहर्रम शरीफ़ के दिन हज़रत नूह अलैहिस्सलाम और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और दीगर अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलाम ने रोज़ा रखा है। (फ़ैज़ुल कदीर, जि.4,स.215)

रमज़ान के बाद सब से अफ़ज़ल रोज़ा

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत है कि रसूले रहमत व बरकत सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : रमज़ान शरीफ़ के बाद अफ़ज़ल रोज़ा अल्लाह तआला का महीना मुहर्रम शरीफ़ में आशूरा का रोज़ा है। और फ़र्ज़ नमाज़ के बाद अफ़ज़ल नमाज़ रात की नमाज़ यानी तहज्जुद की नमाज़ है।

(मुस्लिम शरीफ़, मिश्कात शरीफ़, स.171)

ऐ ईमान वालो ! यौमे आशूरा यानी दस मुहर्रम शरीफ़ बड़ा अज़ीम दिन है इस दिन का रोज़ा रमज़ान शरीफ़ के बाद सब से अफ़ज़ल रोज़ा है। अल्लाह तआला हमें भी इस अज़ीम और बरकत व रहमत वाले दिन तमाम खेल, तमाशों की ग़लत रस्मों से बचाए।

और दस मुहर्रम शरीफ़ के बरकत वाले दिन अदब व एहतिराम के साथ रोज़ा रखने की और इबादतों में मशग़ूल रहने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाए। आमीन सुम्मा आमीन।

दसवीं मुहर्रम शरीफ़ की रात की नफ़्ल नमाज़ें

सुलतानुल बग़दाद फ़रदुल अफ़राद हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं कि शबे आशूरा में कसरत से नमाज़ों और दुआओं का एहतिमाम करना चाहिये

और फ़रमाते हैं कि जो शख़्स इस रात में चार रकअत नमाज़ इस तरह पढ़े कि हर रकअत में अलहम्दु शरीफ़ के बाद पचास मरतबा कुल हुवल्लाहु अहद पढ़े तो रहमान व रहीम मौला तआला उस शख़्स के पचास बरस के पिछले और पचास साल के आइन्दा के गुनाहों को बख़्श देता है और उस के लिये जन्नत में एक हज़ार महल तैयार करता।

(मसबता बिस्सुन्नह, स.16, गुनयतुत तालेबीन, जि.2, स.54)

और जो शख़्स आशूरा की रात में दो रकअत नफ़्ल नमाज़ क़ब्र की रोशनी के वास्ते पढ़े तो अल्लाह तआला इस की क़ब्र को रोशनी से भर देगा। और क़ियामत तक उस की क़ब्र रोशन रहेगी। तरकीब यह है कि हर रकअत में अलहम्दु शरीफ़ के बाद तीन मरतबा कुल हुवल्लाहु अहद पढ़े। (जवाहरे ग़ैबी)

दस मुहर्रम के दिन की नफ़्ल नमाज़ें

हमारे प्यारे आक़ा महबूब नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स दस मुहर्रम शरीफ़ के दिन चार रकअत नमाज़ पढ़े कि हर रकअत में अलहम्दु शरीफ़ के बाद कुल हुवल्लाहु अहद ग्यारह ग्यारह मरतबा पढ़े तो अल्लाह तआला उस के पचास साल के गुनाह बख़्श देता है और उस के लिये एक नूरानी मिम्बर बनाता है।

(नुज़हतुल मजालिस जि.1,स.146)

दस मुहर्रम के दिन जो काम सख़्त मना हैं

मशहूर मुहद्दिस हज़रत अल्लामा अली क़ारी रहमतुल्लाहे तआला अलैहि अपनी किताब मौज़ूआते अलकबीर में तहरीर फ़रमाते हैं कि यौमे आशूरा यानी दस मुहर्रम के दिन काले कपड़े पहनना, सीना कूटना, बाल नोचना, नौहा करना, पीटना, छुरी, चाकू से बदन ज़ख़्मी करना जैसा कि राफ़ज़ी यानी शीओं का तरीक़ा है हराम और गुनाह है ऐसे मलऊन

अफ़आल से परहेज़ करना लाज़िम व ज़रूरी है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहो तआला अन्हो एक हदीस रिवायत करते हैं कि हमारे प्यारे सरकार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

لَيْسَ مِنَّا مَنْ ضَرَبَ الْخُدُوْدَ وَشَقَّ الْجُيُوْبَ وَدَعٰى بِدَعْوَى الْجَاهِلِيَّةِ

यानी वह शख़्स हम में से (यानी हमारी जमाअत में से) नहीं है जो अपने गालों पर मारे और अपने गिरेबान फाड़े और पुकारे जाहिलियत का पुकारना (यानी अपना सीना कूटते हुए चीखे और चिल्लाए) (बुख़ारी शरीफ़, मुस्लिम शरीफ़, मिश्कात, स.150)

आशूरा की रात और दिन इबादत के लिये हैं

ऐ ईमान वालो ! बुजुर्गाने दीन के अक़वाल व बयानात से साफ़ तौर पर साबित हो गया कि आशूरा की रात और आशूरा का दिन रहमत व बरकत और अज़मत व बुजुर्गी वाले हैं।

मुहर्रम शरीफ़ में बाजे बजाना यज़ीदियों का तरीक़ा है

जब हज़रत इमामे पाक शहीद हो गए तो ख़ुशी में यज़ीदियों ने बाजे बजाए और जश्न मनाया मगर आज कल इमामे पाक की मुहब्बत का दावा करने वाले बाजा बजाते हैं। अल्लाह तआला उन्हें हिदायत अता फ़रमाए और यज़ीदियों के तरीक़े पर अमल करने से बचाए।

आशूरा की रात में लहव व लअ्ब और तमाम ख़ुराफ़ात से बचा जाए और कसरत से नमाज़ और तिलावते कुरआने करीम का एहतिमाम किया जाए और कलिमा शरीफ़ दुरूदे पाक का विर्द किया जाए।

आशूरा के दिन रोज़ा रखा जाए और ज़्यादा से ज़्यादा सदक़ा व ख़ैरात किया जाए और सब का सवाब हज़रत इमामे पाक

और शुहदाए करबला की पुरनूर बारगाह में नज़्र किया जाए यही सच्ची अक़ीदत व मुहब्बत है हज़रत इमामे पाक से –

आशिक़े मदीना पेशवाए अहले सुन्नत हुज़ूर आला हज़रत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने –

मुहर्रम शरीफ़ में ख़ुराफ़ात व बिदआत का रद अपनी किताब–(इआलिल इफ़ादा फ़ी तअ्ज़ीयतिल हिन्द व बयानुश्शहादा) में तहरीर फ़रमाया है जिसको देखना हो इस किताब को मुतालआ फ़रमाए।

खुला धोका और इलज़ाम

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने मुरव्वजह तअ्ज़िया दारी और मुहर्रम शरीफ़ में होने वाले ख़ुराफ़ात व बिदआत कारद्द बलीग़ फ़रमाया है।

मगर बे दीन व गुमराह लोग उन ख़ुराफ़ातों और बिदअतों को जन्म देने वाला और राइज करने वाला आप को बताते हैं। अल्लाह तआला ऐसे झूटों से बचाए।

आख़िर में पुर ख़ुलूस इल्तिमास

अल्लाह तआला के शुक्र व एहसान के साथ मैं अपने प्यारे ख़्वाजा हिन्द के राजा सुलतानुल हिन्द अताए रसूल हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो जो इमामे पाक के हुसैनी बाग़ के महकते हुए फूल और आले रसूल हैं उन की बे कस नवाज़ बारगाह में ग़ुलाम बे नवा की गुज़ारिश है कि आप के नाकारा ग़ुलाम ने जो कुछ आप के दरे करीम से भीक नसीब हुई है उस का कुछ हक़ अदा करने की कोशिश की है।

और आप के जद्दे करीम हज़रत इमामे पाक से ग़ुलामी के सुबूत व मुहब्बत में जद्दो जहद कर के जो कुछ लिखा है उसका सिला व बदला मोतअय्यन हो जाए कि दुनिया में अपनी नूरानी चौखट से लगाए रखना और बरोज़े क़ियामत अपने साथ रख लेना और जन्नत में भी साथ नसीब कर देना।

बरसता नहीं देख कर अबरे रहमत
बदों पर भी बरसा दे बरसाने वाले

आस्ताना–ए–चिश्तिया का भिकारी
अनवार अहमद क़ादरी
बरकाती रज़वी
4 रमज़ानुल मुबारक–1428 हि.
15 अगस्त–2010 ई.

गुज़ारिश

हज़रात ! अगर किताब में कोई ख़ामी या ग़लती नज़र आए तो करम फ़रमाकर ज़रूर मुत्तला फ़रमाएं ताकि आइंदा इस्लाह हो सके।

अल जामिअतुल ग़ौसिया ग़रीब नवाज़
खजराना, इन्दौर (म.प्र.
باب یارسول اللہ
या रसूलल्लाह गेट
सुन्नी दावते इस्लामी का
हफ़्तावारी इज्तिमाअ़
हर जुमा, बाद नमाज़े इशा, बम्बई बाज़ार, मीनारा मस्जिद
में मुनअक़िद होता है। आप हज़रात इसमें शरीक होकर
अपने इल्म व अमल में इज़ाफ़ा फ़रमाएँ।